श्री जिनेन्द्रायनमः

जैन भजन शतक

(अर्थात् जैनपद बाटिका)

प्रथम बाटिका

१

तर्ज़ ॥ रघुवर कौशल्या के लाल मुनी की यज्ञ रचाने वाले ॥

भगवन मरुदेवी के लाल मुक्ति की राह बताने वाले ॥
राह बताने वाले सबका भ्रम मिटाने वाले । भगवन० ॥ टेक
लीना अवधपुरी अवतार, छागयो जगमें आनन्दकार ।
बोले सुरनर जय जयकार, सारे जिन गुण गाने वाले ॥ १॥
जगमें था अज्ञान महान, तुमने दिया सबों को ज्ञान ।
करके मिथ्यामत को भान, केवल ज्ञान उपाने वाले ॥ २ ॥
तुमने दिया धरम उपदेश, जामें राग द्वेष नहीं लेश ।
तुम सतब्रह्मा विष्णु महेश, शिव मारग दर्शाने वाले ॥ ३ ॥
जग जीवन पे करुणाधार, तुमने दिया मंत्र नवकार ।
जिससे होगये भवदधि पार, लाखों निश्चय लाने वाले ॥४॥

बैरी कर्म बड़े बल बीर, देते सब जीवों को पीर।
न्यामत हो रहा अधम अधीर, तुमहीं धीर बँधाने वाले ॥५॥

२

तर्ज़ ॥ अमोलक मनुष्य जनम प्यारे ॥

दया दिल में धारो प्यारे। दया बिन बृथा जतन सारे॥टेक
दया धरम का मूल है प्यारे कहते वेद पुराण।
कहीं जीव का मारना नहीं आता बीच कुरान॥
किसी को पढ़ देखो प्यारे ॥ १ ॥
सुबुकतगीं को रहम था एक हरनी पे आया।
रहमदिली से राज जाय गढ़ ग़ज़नी का पाया॥
दया का फल देखो प्यारे ॥ २ ॥
दान शील तप भावना प्यारे संजम ज्ञान बिचार।
एक दया बिन जानियो प्यारे हैं निर्फल बेकार॥
नीर बिन ज्यों सरवर प्यारे ॥ ३ ॥
प्राण सबों के जानियो प्यारे अपने प्राण समान।
प्राण हतेगा और के प्यारे होगी तेरी हान॥
सहेगा दुख लाखों प्यारे ॥ ४ ॥
दया करत संसार सुख प्यारे दया देत निर्बाण।
न्यामत दया न छोड़ियो चाहे छूट जांय सब प्राण॥
दया दुख सागर से तारे ॥ ५ ॥

३

तर्ज़ ॥ पहलू में यार है मुझे उसकी ख़बर नहीं ॥

जब हंस तेरे तनका कहीं उड़के जायगा।

अयदिल बता दो किस से तू नाता रखायगा ॥ टेक ॥
यह भाई बन्धु जो तुझे करते हैं आज प्यार ।
जब आन बने कोई नहीं काम आयगा ॥ १ ॥
यह याद रख कि सब हैं तेरे जीते जीके यार ।
आखिर तु अकेलाही मरण दुख उठायगा ॥ २ ॥
सब मिलके जलादेंगे तुझे जाके आगमें ।
एक छिनकी छिन में तेरा पता भी न पायगा ॥ ३ ॥
कर घात आठ कर्मों का निज शत्रु जानकर ।
बे नाश किये इनके तू मुक्ती न पायगा ॥ ४ ॥
अवसर यही है जो तुझे करना है आज कर ।
फिर क्या करेगा काल जो मुंह बाके आयगा ॥ ५ ॥
अय न्यायमत उठ चेत क्यों मिथ्यात में पड़ा ।
जिन धर्म तेरे हाथ यह मुश्किल से आयगा ॥ ६ ॥

४

तर्ज़ नाटक ॥ सुनले बीबी बातें मेरी कान लगाकर तू झटपट ॥

क्या सोते हो मोह नींद में रेल मौत की आती है ।
लाइन किलयर आ पहुंचा है घंटी शब्द सुनाती है ॥ टेक ॥
नेक चलन का टिकट खरीदो, कहां जाना है मुझसे कहदो ।
प्लेटफोर्म पर जल्दी आवो, टिकट अब काटी जाती है ॥ १ ॥
धरम सार सामान उठावो, शिवपुर की बिल्टी करवावो ॥
न्यामत मतना देर लगाओ, गाड़ी छोड़ी जाती है ॥ २ ॥

५

तर्ज़ ॥ सोरठ अधिक स्वरूप रूप का दिया न जागा मोल ॥

हुआ जनम जनम में ख्वार कुमति तेरी बातों में आके ॥टेक॥
हुआ जैन धरम से विमुख स्वर्ग और शिवपद का दाता।
सहे दुक्ख अनंती बार तेरे वश नर्कों में जाके॥ १ ॥
जिन बाणी नहीं सुनी कुगति का सब डर मिट जाता।
खोया विषय भोग सागर में नरभव चिंतामणि पाके ॥ २ ॥
न्यामत प्रीत करी सुमता से छोड़ मेरा दामन।
आक धतूरे नहीं खावे कोई अमृत फल खाके ॥ ३ ॥

६

तर्ज़ नाटक ॥ प्यारी काहे सर धुने कलपा ना जिया ॥

स्वामि तू है हितकारी सबका जगमें।
तोरे बिन कौन बतलावे साँचे जिन बाणि स्वामि० ॥ टेक ॥
तूही है सबको सुखदाई, नगरि नगरि में तोरी प्रभुताई।
आवो आवो आवो स्वामि, शिवमग को दर्शाओ स्वामि ॥
तेरा ज्ञान, है महान, तुम समान, है नहीं आन, भगवान।
उपकारि दुखहारि, सुखकारि जग तारि ॥ तू है हितकारी० ॥ १

७

तर्ज़ ॥ इन्दरसभा ॥ अरे लालदेव इस तरफ़ जल्द आ ॥

अरे प्यारे सुन तू जरा देके कान।
कि जिनबाणि से जीव पाता है ज्ञान ॥ टेक ॥
मिटाती है संशय सही जीव की।

अगर कोई दे इसपे टुक अपना ध्यान ॥ १ ॥
नहीं ठहरे अनमत कोई सामने ।
करे जब यह परमाण नय का बयान ॥ २ ॥
दिखाती है निक्षेप सत भंग को ।
स्यादवाद इसका निराला निशान ॥ ३ ॥
बनावे यह परमात्मा जीव को ।
जो निश्चय करे देवे शिव बेगुमान ॥ ४ ॥
परीक्षा से सिद्धी करे वस्तु की ।
बताती नहीं यूंहीं लाना ईमान ॥ ५ ॥
धर्म अर्थ शिव काम चारों मिलें ।
जो न्यामत कोई इसका ले ठीक जान ॥ ६ ॥

८

तर्ज़ ॥ तोरि वाली सी उमर तिरछे नैना ॥

जिनवाणी की कही तूने नहीं मानी ।
नहीं मानी तूने अभिमानी ॥ जिन० ॥ टेक ॥
लख चौरासी योनि में भटका, दुख सहे तूने अभिमानी ॥ १ ॥
जिनवाणी को हृदय धरिये, जो तू है चेतन ज्ञानी ॥ २ ॥
जनम जनम के पाप कटेंगे, न्यामत सुन बच सुखदानी ॥ ३ ॥

९

तर्ज़ ॥ सोरठ अधिक स्वरूप रूप का दिया न जागा मोल ॥

सुनो जैन ऋषी मुनि राज धर्म उपदेश सुनाते हैं ।
भूले फिरते जीवों को मुक्ति की राह बताते हैं ॥ टेक ॥

ना काहू से द्वेष राग चित में नहीं लाते हैं ।
तन धन की ममता छोड़ ध्यान आपे में लगाते हैं ॥ १ ॥
शत्रु मित्र एक सार नहीं कुछ भेद रखाते हैं ।
आते हैं जो जो शरण सभी को पार लँघाते हैं ॥ २ ॥
तिलतुश परिग्रह छोड़ दिगम्बर वेष बनाते हैं ।
इस बिन मुक्ति नहीं होय जीव को यूं दर्शाते हैं ॥ ३ ॥
ग्रीषम वर्षा शीत वेदना सारी उठाते हैं ।
दो बीस परीषह सहें कर्म का नाश कराते हैं ॥ ४ ॥
तीन काल सामायक कर निज आतम ध्याते हैं ।
और सांझ सवेरे पर जीवन हित शास्त्र सुनाते हैं ॥ ५ ॥
मिथ्या मत को नाश शुद्ध सम्यक्त दिलाते हैं ।
और मोह नींद में सोय पड़ों को आन जगाते हैं ॥ ६ ॥
लख मोह अग्नि से तप्त जीव करुणा मन लाते हैं ।
कर जिनवाणी उपदेश धर्म अमृत बरसाते हैं ॥ ७ ॥
जीव दया का रूप तत्व का स्वरूप दिखाते हैं ।
जिसको जो संशय होय कहो सब भ्रम मिटाते हैं ॥ ८ ॥
अंजुल जल ज्यों आयु सदा दिन बीते जाते हैं ।
न्यामत सुकृत करना सो करलो गुरु समझाते हैं ॥ ९ ॥

१०

तर्ज़ ॥ किस विधि कीने करम चकचूर । उत्तम छिमापे जिया चम्भा मोहे आवे ॥ किस० ॥

जागो मुसाफिर प्यारे जाना है दूर ॥

राह विषे मत सोवो रे अनारी। जागो० ॥ टेक ॥

लख विषयन सुख मन बौरायो,
मोह विषय में हुआ चकचूर।
सम्यक दर्शन, ज्ञान गठरिया,
लुट जावेगी देखो यहां पे जरूर ॥ १
पाँचों इन्द्री चोर अनादी,
संग रहैं होना एक छिन दूर।
क्रोध लोभ माया मद चारों,
डारेंगे आँखों में कर्मों की धूर ॥ २ ॥
यह संसार असार चलाचल,
दुक्ख कुचाचल से भरपूर।
न्यामत तज आलस्य भज पारश,
काटो यह आठो कर्म करूर ॥ ३ ॥

११

तर्ज़ ॥ इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

देव अरिहंत गुर निर्ग्रन्थ आगम स्याद्वाद अपना।
यही सत और असत सब आज़माए जिसका जी चाहे ॥ टेक॥
बना जिन धर्म का मंडल हितैषी देश हरियाना।
बजे है धर्म नक्कारा बजाए जिसका जी चाहे ॥ १ ॥
कुमारग से हटा शिवमग दिखाना काम है इसका।
फ़रक़ इसमें नहीं ईमान लायें जिसका जी चाहे २ ॥
धरम देश उन्नति करना यही है काम मर्दों का।

परोपकारी में हाथ अपने दिखाये जिसका जी चाहे ॥ ३ ॥
खड़ा झंडा निशांकित का पनाह लेते हैं जो आकर ।
नहीं डरते किसी से हैं डराए जिसका जी चाहे ॥ ४ ॥
लगा है पोदा उलफ़त का झुकी हैं शाख हमदर्दी ।
अजब एकताई फल फूला है खाये जिसका जी चाहे ॥ ५ ॥
सभासद इसका हो सकता है हर जिन धर्म श्रद्धानी ।
खुला दरबार है यहां पे तो आए जिसका जी चाहे ॥ ६ ॥
इरादा है यह मंडल का करें उद्धार भारत का ।
तमन्ना सबकी बरलाए सुनाए जिसका जी चाहे ॥ ७ ॥
सरे बाजार पंडित जन धर्म उपदेश देते हैं ।
दिलों में जो शकूक होवें मिटाऐं जिसका जी चाहे ॥ ८ ॥
न पर खंडन से मतलब है न मंडन मुद्दआ अपना ।
सतासत निर्णय करते हैं कराए जिसका जी चाहे ॥ ९ ॥
धरम प्रभावना मंडल तनोमन धनसे करता है ।
सरेमू भी फ़रक़ होवे दिखाये जिसका जी चाहे ॥ १० ॥
कान देकर सुनो न्यामत पुकार हम सबसे कहते हैं ।
पड़ा बेड़ा भँवर में है बचाए जिसका जी चाहे ॥ ११ ॥

१२

तर्ज़ ॥ सोरठ अधिक स्वरूप रूपका दिया न जागा मोल ॥

कर सकल बिभाव अभाव मिटादो बिकलपता मनकी ॥ टेक ॥
आप लखे आपमें आपा गत ब्योहारन की ।

तर्क बितर्क तजो इसकी और भेद विज्ञानन की ॥ १ ॥
यह परमातम यह मम आतम, बात बिभावन की ॥
हरो हरो बुधनय प्रमाण की और निक्षेपन की ॥ २ ॥
ज्ञान चरण की बिकलप छोड़ो छोड़ो दर्शन की ।
न्यामत पुद्गल हो पुद्गल चेतन शक्ती चेतन की ॥ ३ ॥

१३

तर्ज़ ॥ मेरी आह का तुम असर देख लेना । वह आयेंगे थाँबे जिगर देख लेना ॥

करम का तुम अपने यह फल देख लेना ।
करोगे जो कुछ आज कल देख लेना ॥ टेक ॥
बिषौं में लगे रहते हो रात दिन पर ।
मिलेगा न सुख एक पल देख लेना ॥ १ ॥
सताओगे जगमें जो तुम जी किसी का ।
पड़ेगी न तुमको भी कल देख लेना ॥ २ ॥
फिरोगे चहूं गति में हिंसा से न्यामत ।
है कहना हमारा अटल देख लेना ॥ ३ ॥

१४

तर्ज ॥ ज़माना तेरा मुबतला होरहा है । तुझे भी खबर है कि क्या होरहा है ॥

अनारी जिया तुझको यह भी खबर है ।
किधर तुझको जाना कहाँ तेरा घर है ॥ टेक ॥
मुसाफ़िर है दो चार दिनका यहाँ पे ।

न यह तेरा दर है न यह तेरा घर है ॥ १ ॥
कहो कौन से राह जाना है तुझको ।
तेरे साथ में भी कोई राहबर है ॥ २ ॥
है अफ़सोस न्यामत तू ग़ाफ़िल है इतना ।
न यहाँ की खबर है न व्हां की खबर है ॥ ३ ॥

१५

तर्ज़ ॥ मेरी आह का तुम असर देख लेना । वह आयेंगे थाँवे जिगर देख लेना ॥

सिया हरने का यह असर देख लेना ।
कि तनसे जुदा अपना सर देख लेना ॥ टेक ॥
सती को चुराते हो वनमें अकेली ।
नफ़ा टोटा अपना मगर देख लेना ॥ १ ॥
मेरे हाथ लाना है बस जहर क़ातिल ।
बुरा है मुझे बद नज़र देख लेना ॥ २ ॥
अरे मानले कहना मेरा तू रावण ।
वगरना नरक अपना घर देख लेना ॥ ३ ॥
बदी बीज बोवेगा जो कोई न्यामत ।
मुसीबत के उसमें समर देख लेना ॥४॥

१६

तर्ज़ ॥ सोरठ अधिक स्वरूप रूपका दिया न जागा मोल ॥

जय जय श्री अरिहंत आज हम पूजन को आए ॥ टेक ॥
काम सरा सब मोमन का जब तुम दर्शन पाए ।

मेघ सुधाके हो बरसे हम बहु आनन्द पाए ॥ १ ॥
यही भई परतीत मेरे तुम देवन के देवा ।
जनम जनम के अघकट गए मेरे तुम दर्शन पाए ॥ २ ॥
नारद ब्रह्मा और सभी मिल तुमरे गुण गाए ।
नरपति सुरपति नित तुम ध्यावें बंछित फल पाए ॥ ३ ॥
इन्द्र धनेन्द्र सभी मिल आए सिर चरणन लाए ।
न्यामत जनम सुफल कर मानों तुम दर्शन पाए ॥ ४ ॥

१७

तर्ज़ ॥ इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

प्रभू की भक्ति काफ़ी है शिवा सुन्दर मिलाने को ॥ टेक ॥
छुड़ा दामन कुमत से जो तू शिव सुन्दर को चाहे है ।
तुझे आई है अय चेतन सखी सुमता बुलाने को ॥ १ ॥
जगामत मोह राजा का पड़ा है ख्वाब ग़फ़लत में ।
बनाले ध्यान की नवका भवोदधि पार जाने को ॥ २ ॥
तुझे अय न्यायमत कोई अगर रहबर नहीं मिलता ।
तो ले चल संग जिन बाणी तुझे रस्ता बताने को ॥ ३ ॥

१८

तर्ज़ ॥ ख़ातीका खूनला तेरी मामी लागूंरे । चरख़ा तु घड़दे रांगलोरे खूबा पीढी लाल गुलाल, खातीका खूनला (यह गीत हरयानेमें ज़मींदार गाते हैं)

ज्ञानीरा चेतना पर नारी त्यागोरे ॥ टेक ॥
या पर नारी देखतारे मरो धवल सेठ गँवार ज्ञानी० ॥ १ ॥
या पर नारी बांछतारे परी कीचक मार अपार ज्ञानी० ॥ २ ॥

या परनारी छूवताँ रे गयो रावण नरक मंझार ज्ञानी० ॥३॥
न्यामत पर त्रिय त्यागिये, जैसे चौथ को चंद विकार ज्ञानी० ४

१९

तर्ज़ ॥ जावो जावोजी शाम जहाँ रात रहे । हमारे ॥ कैसे आये भोर भये ॥

सुनो सुनोजी बात ज़रा ध्यान करी ।
सुमारग क्यों ना लागे एक घड़ी ॥
कुमता घर काल अनादि रहे । वह काम किये जो कुमति कहे ॥
हमरी नहीं एक सुनी । सुनो० ॥ १ ॥
गुरु वार वार हित बात कही । तुम नेक नहीं चितमाहीं धरी ॥
मन माना सोही करी । सुनो० ॥ २ ॥
जब बिपति पड़ी सुमता सूझे । धनराज मिलैं कुमता बूझे ॥
न्यामत नहीं बात भली । सुनो० ॥ ३ ॥

२०

तर्ज़ ॥ सदा नहीं रहने का मेरी जान हुसनपर यंहीं अकड़ते हो ।

मिले तुमको भी नहीं आराम । जो तुम औरों को सताते हो । टेक
दया धरम को छोड़ पापमें जिया लगाते हो ।
दुख देते हो औरों को खुद भी दुख पाते हो ॥
क्यों होकर चेतन चतुर सुजान । निपट मूरख बन जाते हो ॥१॥
क्रोध लोभ मद माया के बशमें आजाते हो ।
दयाभाव को त्याग प्राण प्राणी के गमाते हो ॥
तुम्हारा हो कैसे कल्याण । जीव औरों का दुखाते हो ॥२॥
तप संजम और पूजा भक्ती ज्ञान ध्यान अस्नान ।

जिनके दया हृदय नहीं है सब झूठा तूफ़ान ॥
निमाज़ और रोज़ा और ईमान । यूंही करके दुख पाते हो ॥३॥
सबके जीव जान अपनी सम और करुनामन धार ।
वेद कुरान पुराण सबों का समझो यह ही सार ॥
दया बिन नहीं होगा कल्याण जनम बिर्थाही गमाते हो ॥४॥
कर पूजा मंदिर में घड़ी घड़ियाल बजाते हो ।
जो दिलमें नहीं दया यूं ही पाखंड रचाते हो ॥
प्रभू को है सबही का ज्ञान । उसे क्या धोका दिखाते हो ॥५॥
हिंसाही से होता है इस दुनियां में दुख पाप ।
काल फूट और प्लेग समझ लो हिंसा का परताप ॥
रसातल जाता हिन्दुस्तान । दया चितमें नहीं लाते हो ॥६॥
राग द्वेष को छोड़ न्यायमत तज दो हिंसक भाव ।
दया धरम मनमें भजो सब क्या जोगी क्या राव ॥
दया से हो सबका कल्याण । जो भारत सुत कहलाते हो ॥७॥

॥ इति प्रथम बाटिका समाप्तम ॥

॥ श्रीजिनेन्द्रायनमः ॥

द्वितीय वाटिका

२१

तर्ज़ ॥ यह कैसे बाल बिखरे हैं, यह क्यों सूरत बनी ग़मको ॥

तुम्हारा चंद मुख निरखे सुपद रुचि मुझको आई है।
ज्ञान चमका परापर की मुझे पहिचान आई है ॥ टेक ॥
कला बढ़ती है दिन दिन कामकी रजनी बिलाई है।
अमृत आनंद शासन ने शोक तृष्णा बुझाई है ॥ १ ॥
जो इष्टानिष्ट में मेरी कल्पना थी नशाई है।
मैंने निज साध्य को साधा उपाधी सब मिटाई है ॥ २ ॥
धन्य दिन आज का न्यामत छबी जिन देख पाई है।
सुधर गई आज सब बिगड़ी अचल ऋधि हाथ आई है ॥ ३ ॥

२२

तर्ज़ ॥ नाटक (इसपर थेटर में नाच होता है) ॥

अरि आवो शुभघड़ियां, मनावो शुभघड़ियां, मनावो शुभ घड़ियां, मनावोरी ॥ टेक ॥
घर घर में आनंद छाय रह्यो हैं।
श्री जी पे वारो, बनाय गुल कलियां,

बनाय गुल कलियां, बनाय गुल कलियां, मनावोरी अरि० ॥१॥
गावो बजावो हाव भाव दिखाओ।
जय जय जिनेन्द्र, सुनावो रल मिलियां,
सुनावो रल मिलियां, सुनावो रल मिलियां, मनावोरी अरि०॥२॥
छम छम छम छम, नाच नचावो।
तालि बजावो, बजावो मन भरियां।
बजावो मनभरियां बजावो मनभरियां, मनावोरी अरि० ॥ ३ ॥
मुक्ति, चिदानन्द नाटक रचाओ।
कर्मों की धूल, उड़ावो गलि गलियां।
उड़ाओ गलिगलियां, उड़ाओ गलिगलियां, मनावोरी अरि०॥४॥
अमृत प्रभावना, दिया जैन बाणी।
पीवो पिलावो, दिखाय छल बलियां।
दिखाय छल बलियां, दिखाय छल बलियां मनावोरी अरि० ॥५॥

२३

तर्ज़ ॥ सोरठ अधिक स्वरूप रूपका दिया न जागा मोल ॥

अरे हिंसा का है फल भारी तेरे से सहा न जागा भार ॥ टेक ॥
चोरी झूठ कुशील परिग्रह हिंसा अंग बिचार।
इनसे दुर्गति होवे नर्क में पड़े अनंती बार ॥ १ ॥
सारे जीव जान अपनी सम और करुणा मन धार।
जाकी हिंसा तू करे वह तो अपनी आप निहार ॥ २ ॥
हों हिंसा से निर्धन निर्बल नित दुख सहैं अपार।
न्यामत तज हिंसक भाव भावसे करले पर उपकार ॥ ३ ॥

२४

तर्ज़ ॥ राजा हूं मैं कौम का और इन्दर मेरा नाम चाल इन्दर सभा को ॥

चेतन आनंद रूपजी, सुनो हमारी बात
तू राजा तिहूं लोक का, है जगमें विख्यात ॥ १ ॥
जिनबाणी माता तेरी, गहो चरण चित लाय ।
पद जाके सेवैं सदा, इन्द्र चन्द्र शिरनाय ॥ २ ॥
करुणा सब पर कीजिए, दिलमें दया विचार ।
दया धर्म का मूल है, यह निश्चय मनधार ॥ ३ ॥
इक संवर दो निर्जरा, शुभ आश्रव मिलचार ।
यह चतुरंग सेना बनी, जिसका वार न पार ॥ ४ ॥
समकित है सेनापती, मंत्री ज्ञान निहार ।
ज्ञान सुता सुमता सती, है तेरी पटनार ॥ ५ ॥
गुण अनंत हैं कोशमें, कोषाध्यक्ष सुदान ।
अन्न औषधि नित दीजिए, अभय दान और ज्ञान ॥ ६ ॥
ज्ञान सुमत की सीखमें, रहना चतुर सुजान ।
यहही हितकारी तेरे, सुखकारी दुख भान ॥ ७ ॥
सत्यारथ उपदेश यह, दियो श्री जिनराज ।
न्यामत मन निश्चय करो, मिले मोक्ष का राज ॥ ८ ॥

२५

तर्ज़ ॥ लेता जाइयोरे साँवरिया बीड़ी पान पानकी ॥

पीजो पीजो रे चेतनवा पानी छान छानके ॥ टेक ॥
निरख निरख कर पग धर चलना ।

जैन बैन सत मान मान के ॥ १ ॥
हित मित बचन कहो मेरे प्यारे ।
क्रोध लोभमद भान भान के ॥ २ ॥
निश भोजन भूले नहीं करना ।
जीव पड़ेंगे वामें आन आन के ॥ ३ ॥
न्यामत हलन चलन जो करना ।
करना सुमति हिए ठान ठानके ॥ ४ ॥

२६

तर्ज़ ॥ सोरठ अधिक स्वरूप रूपका दिया न जागा मोल ॥

जिया घर में सुमति तेरे नार कुमति पर क्यों ललचातेहो ॥ टेक ।
कुमति मोह की सुता मोह की लाग लगाते हो ।
इक विषय बासनाकार नारके धोके में आते हो ॥ १ ॥
कल्पतरू को तोड़ पेड़ बम्बूल लगाते हो ।
काँच खंडले चिंतामणि सिंधूमें बगाते हो ॥ २ ॥
सुमति सुहागन त्याग कुमति को घरमें बुलाते हो ।
न्यामत शिव मारग छोड़ कुमारग को क्यों जाते हो ॥ ३ ॥

२७

तर्ज़ ॥ सोरठ अधिक स्वरूप रुप का दिया न जागा मोल ॥

सुन कुमति दुहागन नार मेरे घर अब क्यों आती है ॥ टेक ॥
काल अनन्त चतुर गतिमें जीको भ्रमाती है ।
तू जो जो दुख देती है बात वह कही नहीं जाती है ॥ १ ॥
तू कुलटा धोका देकर नर्कों ले जाती है ॥

फिर वह गत करती है तेरी जो पार बसाती है ॥२॥
न्यामत प्रीत तजी अब तेरी बू नहीं भाती है ।
चौथ चान्द सम मुख तेरा मुझे क्यों दिखलाती है ॥३॥

२८

तर्ज़ ॥ सोरठ अधिक स्वरूप रूप का दिया न जागा मोल ॥

घर आवो सुमति बरनार तेरी सूरत मन भाती है ॥ टेक ॥
कुमति दुहाग दिया तुझ कारण जो तू चाहती है ।
पूनम चन्द्र तेरा मुख है क्यों नहीं दिखलाती है ॥ १ ॥
मुनि जन इन्द्रबली नारायण सब मन भाती है ॥
स्वर्ग चन्द्र सूरज तु अंतको शिवले जाती है ॥ २ ॥
तुझको पाकर परमाद मोहकी थिति घट जाती है ।
न्यामत प्रीति करी तेरेसे अब नहीं जाती है ॥ ३ ॥

२९

तर्ज़ ॥ सोरठ अधिक स्वरूप रूपका दिया न जागा मोल ॥

अरे यह क्या किया नादान तेरी क्या समझपे पड़गई धूल। टेक
आंब हेत तैं बाग़ लगायो बो दिये पेड़ बम्बूल ।
अरे फल चाखेगा रोवेगा क्या रहा है मन में फूल ॥१॥
हाथ सुमरनी बाँह कतरनी निज पद को गया भूल ।
मिथ्या दर्शन ज्ञान लिया रहा समकित से प्रतिकूल ॥२॥
कंचन भाजन कीच उठाया भरी रज्जाई शूल ।
न्यामत सौदा ऐसा किया जामें ब्याज रहा नहीं मूल ॥३॥

३०

तर्ज़ ॥ जल कैसे भरूं नदिया गहरी ॥

अब कैसे करूं निद्रा गहरी ।
निद्रा गहरी निद्रा गहरी ॥ अब० ॥ टेक ॥
नाद करूं सुनने नहीं पावे ।
हाथ गहूं परमत* बैरी ॥१॥
चाल कुमति समझी नहीं जावे ।
सुध बुध आज गई मेरी ॥२॥
न्यामत सीख सुनो सुमता की ।
सब सुधरे बिगड़ी तेरी ॥३॥

३१

राग खमाच (ठुमरी) तर्ज़ ॥ आज आली श्रीमती जननी सुत जायोरी ॥

आज प्रभू समकित मेरे मन आई जी ॥ टेक ॥
भूला फिरा भव बन बन में तो ।
कबहुना सुध बुध आई जी ॥ आज० ॥ १ ॥
आज सुनी जिनबाणी मैंने ।
मिटगई विकल पताई जी ॥ आज० ॥ २ ॥
तुमहो महा उपकारी सबके ।
नींद अनादि हटाई जी ॥ आज० ॥ ३ ॥
जिनबाणी बासियो उर मेरे ।
ज्ञान कला उर छाई जी ॥ आज० ॥ ४ ॥

---

* प्रमाद

भव भव में प्रभु दर्शन दीजो ।
न्यामत यही चित लाई जी ॥ आज० ॥ ५ ॥

३२

तर्ज़ ॥ सेवैं सब सुरनर मुनी तेरा द्वार ॥

सेऊं नित नित एक चित चरण चार ॥ टेक ॥
चारों मंगल चारों उत्तम ।
यह ही अशरण शरण चार ॥ सेऊं० ॥ १ ॥
सिद्ध अरिहंत मुनी जिन शासन ।
सुमति सुगति नितकरन चार ॥ सेऊं० ॥ २ ॥
सब मंगल में आदि मंगल ।
सब जग जन अघ हरण चार ॥ सेऊं० ॥ ३ ॥
न्यामत यह निश्चय मन लायो ।
जग में तारण तरण चार ॥ सेऊं० ॥ ४ ॥

३३

तर्ज़ ॥ कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुश्किल है ॥

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी मुझे नहीं चैन पड़ती है।
छबी वैराग तेरी सामने आंखों के फिरती है ॥ टेक ॥
निराभूषण विगत दूषण पदम आसन मधुर भाषण ।
नजर नैनों की नासाकी अनीपर से गुजरतीहै ॥ १ ॥
नहीं कर्मों का डर हमको है जब लग ध्यान चरणों में ।
तेरे दर्शन से सुनते हैं करम रेखा बदलती है ॥ २ ॥
मिलेगर स्वर्ग की सम्पत अचंभा कौन है इसमें ।

तुम्हें जो नैनं भर देखे गती दुर्गत की टरती है ॥ ३ ॥
हज़ारों मूरतें हमने बहुत सा गौरकर देखी ।
शांत मूरत तुम्हारी सी नहीं नज़रों में चढ़ती है ॥ ४ ॥
झुकाते हैं जो सर चरणों में उनके फूल बरमाला ।
गलेमें सुन्दरी शिवनार के हाथों से पड़ती है ॥ ५ ॥
जगत सरताज हे जिनराज न्यामत को दरश दीजे ।
तुम्हारा क्या बिगड़ता है मेरी बिगड़ी सँवरती है ॥ ६ ॥

३४

तर्ज़ ॥ आज आली श्रीमती जननी सुत जायोरी ॥

आज जिन चरण शरण मन लायो जी ॥ टेक ॥
तुम भव तारक कलमल हारक ।
मुनि जन गण गुण गायो जी ॥ आज० ॥ १ ॥
शिव मग नेता अघगिरि भेता ।
सब ज्ञेय ज्ञान उपायो जी ॥ आज० ॥ २ ॥
अब मैं नरभव का फल पायो ।
समकित मेरे मन आयो जी ॥ आज० ॥ ३ ॥
जनम जनम की तृष्णा भागी ।
किल्विष कलुष नशायो जी ॥ आज० ॥ ४ ॥
जिन जन भक्ती धरी चित तेरी ।
छिन में आप अपनायो जी ॥ आज० ॥ ५ ॥
न्यामत जिन सन्मुख सुख देखा ।
विमुख भए दुख पायो जी ॥ आज० ॥ ६ ॥

३५

तर्ज़ ॥ एजी हम आए हैं दर्शन काज मिटावो प्रभु पीथा हमारी जी ॥

एजी प्रभु भवजल पतित उधार तुम बिन कोई नहीं ऐसाजी। टेक
और देव सब रागी द्वेषी।
कैसे उतरें पार हमें है भारी अंदेशा जी ॥ एजी० ॥ १ ॥
तारत तरण तुमही हम जानी।
तेरेहि गुण उरधार। हरेंगे कर्म कलेशा जी ॥ एजी० ॥ २ ॥
जीव अनन्त प्रभु तुम तारे।
अबके हमारी बार यही न्यामत को भरोसा जी ॥ एजी० ॥ ३ ॥

३६

तर्ज़ ॥ यह कैसे बाल हैं बिखरे यह क्या सूरत बनी ग़म की ॥

अहो जग बंधु जग नायक अर्ज़ इतनी हमारी है।
कि कर्मों ने मेरी इस जगमें आ हुरमत बिगारी है ॥ टेक ॥
मैं इस भव बनमें फिर हारा चतुर गति दुख सहे भारी।
कहूं मैं अपने मूंह से क्या बिपति जानो हो तुम सारी ॥ १ ॥
कर्म बैरी मुझे हर आन मन मांना सताते हैं।
मनुष तिर्यंच सुर नारक में अरहट जूं फिराते हैं ॥ २ ॥
लुटेरे सारी दुनियां के ज्ञान धन हर लिया सारा।
पाप पुन पांव में बेड़ी लगा तन बंध में डारा ॥ ३ ॥
सिंघ बानर सर्प शूकर नवल सब तुमने तारे हैं।
ऊंच और नीच नहीं देखा शरण आए उभारे हैं ॥ ४ ॥

सुयश तेरा सुना तुमहो हितू सबके बिना कारण।
शरण आकर गही न्यामत उतारो हे तरण तारण ॥ ५ ॥

३७

तर्ज़ ॥ हमारे प्रभु मुकत वरण गएरी। ष.की बात मांहे भाई जान जीओं की बचाई जी ॥ हमारे० ॥

आली आज सारे बिघन हरण भएरी।
सबका भरम मिटाया। शिव मग दर्शाया ॥
आली आज सारे बिघन हरण भएरी ॥ टेक ॥

दोहा।

आए जिन जब गर्भ में, माता पिछली रैन।
अकस्मात् स्वप्न लखे, सोला सब सुख देन ॥

झड़ी।

बात पीया को सुनाई। सुन फल हर्षाई ॥
सारे नगर में रतन बरसन भएरी ॥ आली० ॥ १ ॥

दोहा।

जनम भया जिनराज का, सुर नर खग हर्षाय।
गिर सुमेरु पे लेगए, जय जयकार कराय ॥

झड़ी।

क्षीरो दधि भरलाए। भुज सहस बनाए ॥
कर न्हवन जिनेन्द्र के भवन गयेरी ॥ आली० ॥ २ ॥

दोहा।

छिन भंगुर संसार लख, छोड़ दिया परिवार।
लोकांतिक सुर आयके, करी अस्तुती सार॥

झड़ी।

राज पाट तज दीनो। बीतराग चित कीनो॥
बन मांही दीक्षा जैन की धरण गयेरी॥ आली०॥ ३॥

दोहा।

घात घातिया करम को, लीनो केवल ज्ञान।
सकल ज्ञेय ज्ञायक भए, सब दर्शी भगवान॥

झड़ी।

सात तत्व षट द्रब्य। इनकी पर्याय सर्ब।
प्रभु दिव्य ध्वनि मांही बरणन कियेरी॥ आली०॥ ४॥

दोहा।

नो कर्म थिति जब घटी, भये आप शिवरूप।
निरआकुल आनंदमय, अतुल शक्ति चिदरूप॥

झड़ी

परमातम कहाये। मुनि जन गुण गाए।
लख न्यामत जिनेन्द्र के चरण गहेरी॥ आली०॥ ५॥

३८

तर्ज़॥ यह कैसे बाल हैं बिखरे यह क्या सूरत बनी ग़म की॥

सुनो सिद्धार्थ के नंदन सती त्रिशला उरानंदन।

निरंजन जन जगत रंजन बिपति अपनी सुनाऊं मैं ॥ टेक॥
मेरा मन मोह मतवारा, सेज मिथ्यात पग धारा ।
पड़ा अज्ञान निद्रा में कहो क्योंकर जगाऊं मैं ॥ १ ॥
कुमति आशक्त हो निश दिन बिषय में खो दिया निज गुण ।
सुमति सुन्दर सुहागन को तजा क्योंकर मनाऊं मैं ॥ २ ॥
क्रोध मदलोभ माया का बनाया है कोट भारी ।
राग और द्वेष का पहरा लगा जाने न पाऊं मैं ॥ ३ ॥
तुही है देव देवन को करो बश इस मेरे मनको ।
लहे न्यामत जो निज गुण को चरण में चित लगाऊं मैं ॥ ४ ॥

३९

तर्ज़ ॥ काहे को चले गिरनारी विनती तो सुनियो ॥

तू हितकारि दुख हारि बिनती तो सुनियो ॥ ॥ टेक ॥
बैरि कर्म महा दुखदाई । इनसे करो छुटकारी ॥बिनती०॥ १ ॥
क्रोध लोभ मदमाया चारों । दुखकारी अघभारी ॥ बिनती०२॥
न्यामत शरण चरण तुमरीली । बेग करो उद्धारी । बिनती० ॥३॥

४०

तर्ज़ ॥ सुन सुनरी भावी भय्या को भेजूं परदेश ।
नहीं नहीं रे देवर सेजों की शोभा उनके साथ ॥

(यह गीत अक्सर औरतें गाती हैं)

परदेशिया में कौन चलेगा तेरे लार ॥ टेक ॥
चलेगी मेरी माता चलेगी मेरी नार ।
नहीं नहीं रे चेतन जावेंगी दर तक लार ॥ परदे० ॥ १ ॥

चलेगा मेरा भाई चलेगा मेरा यार ।
नहीं नहीं रे चेतन फूंकेंगे अगन मंझार ॥ परदे० ॥ २ ॥
चलेगी मेरी माता की जाई मेरी लार ।
नहीं नहीं रे चेतन झूठा है सारा व्यवहार ॥ परदे० ॥ ३ ॥
चलेगा मेरा बेटा पिता परिवार ।
नहीं नहीं रे चेतन मतलब का सारा संसार ॥ परदे० ॥४॥
चलेगी मेरी फ़ौज चलेगा दरबार ।
नहीं नहीं रे चेतन जीते जी की है सरकार ॥ परदे० ॥५॥
चलेगा मेरा माल खज़ाना घरबार ।
नहीं नहीं रे चेतन पड़ा रहेगा सब कार ॥ परदे० ॥ ६ ॥
चलेगी मेरी काया चलेगा मनसार ।
नहीं नहीं रे न्यामत छोड़ेंगे तो हे मंझधार ॥ परदे० ॥ ७ ॥

॥ इति द्वितीय बाटिका समाप्तम् ॥

॥ श्री जिनेन्द्रायनमः ॥

तृतीय बाटिका

४१

तर्ज़ ॥ इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

अपूरब है तेरी महिमा कही हमसे नहीं जाती ।
तुम्ही सच्चे हितू सबके तुम्ही हरएक के साथी ॥ टेक ॥
पाप जब जग में फैला था गरम बाज़ार हिंसाका ।
बिचारे दीन जीवों को कभी नहीं चैन थी आती ॥ १ ॥
हज़ारों यज्ञ में लाखों हवन में जीव मरते थे ।
कि जिसको देखकर भर आति थी हरएक की छाती ॥ २ ॥
जगत कल्याण करने को लिया अवतार तब तुमने ।
सुरासुर चर अचर सबको तेरी बाणी थी मनभाती ॥ ३ ॥
दया का आपने उपदेश दुनिया में दिया आके ।
वगरने ज़ालिमों के हाथ से दुनिया थी दुख पाती ॥ ४ ॥
जो था पाखंड दुनिया में हुआ सब दूर इकदम में ।
ध्वजा हरसू नज़र आने लगी जिनमत की लहराती ॥ ५ ॥
जगतकर्ता के और हिंसा के जो झूठे मसायल थे ।
न्याय परमाण से तुमने किया रद्द सबको इकसाथी ॥ ६ ॥

हटा हिंसा किया तुमने दयामय धर्म को जारी ।
न्यायमत जाय बलिहारी है दुनिया यश तेरा गाती ॥ ७ ॥

४२

तर्ज़ ॥ बूंटी लाने का कैसा बहाना हुआ ॥
(भद्रकाली भीलनी का अपने पति को मुनोंका शिकार करने से रोकना और भीलका मुनों के चरणों में गिरना और महावीर का अवतार लेना)

कैसा त्यागी का तुमने निशाना किया । कैसे० ॥
मुझको रुसवाय सारा ज़माना किया ॥ कैसे० ॥ टेक ॥
यह बैरागी महान । नहीं क्रोध और मान ॥
करें आतम का ध्यान । तजे महलो मकान ॥
आके जंगल में अपना ठिकाना किया ॥ कैसे० ॥ १ ॥
दान मुक्ती का सार । सारे नर और नार ॥
मांगें हाथ पसार । करे सबका उपकार ॥
नहीं छोटे बड़े का बहाना किया ॥ कैसे० ॥ २ ॥
इनको मृगी न जान । ऐसा होके अयान ॥
मत खैंचे कमान । मत खो इनकी जान ॥
कैसे दिलसे दया को रवाना किया ॥ कैसे० ॥ ३ ॥
सच जानो सुबीर । होगी नर्कों में पीर ॥
मेरे मनको न धीर । मैं तजूंगी शरीर ॥
तुम जो जोगी का इस दम निशाना किया ॥ कैसे० ॥ ४ ॥
सुनके भील सुजान । डरा मन में अज्ञान ॥
डारे तीरो कमान । जगा हृदय में ज्ञान ॥
भद्रकाली को लेकर पयाना किया ॥ कैसे० ॥ ५ ॥

मुनी चरणन मंझार । गिरे भील और नार ॥
लेके भाल अघकार । महावीर अवतार ॥
न्यायमत उपकार ज़माना किया ॥ कैसे० ॥६॥

४३

तर्ज़ ॥ जल कैसे भरूं नदिया गहरी ॥

दुख कासे कहें कलयुग भारी ।
कलयुग भारी कलयुग भारी ॥ दुख० ॥ टेक ॥
दया धरम हृदय में नाहीं ।
करे जीव घात हिंसा भारी ॥ दुख० ॥१॥
शील गया है भारत में से ।
कर दिया नियोग कुपथ जारी ॥ दुख० ॥२॥
झूठ बचन हा ! निश दिन बोलें ॥
करें कपट चूतं चोरी जारी ॥ दुख० ॥३॥
किस बिधि से सुख होवे प्यारे ।
करो काम महा दुख अघकारी ॥ दुख० ॥४॥
हमदरदी किस विधि से होवे ।
लड़ें आपस में दे दे गारी ॥ दुख० ॥ ५ ॥
भारत क्यों ना दुखिया होवे ।
तजा जैन धर्म सब सुखकारी ॥ दुख० ॥ ६ ॥
पक्षपात तज जिनमत देखो ।
नहीं राग द्वेष सब हितकारी ॥ दुख० ॥ ७ ॥
तज आलस पुरुषारथ धारो ।

न्यामत सुधरे बिगड़ी सारी ॥ दुख० ॥

४४

तर्ज़ ॥ रघुबर कौशल्या के लाल मुनी की यज्ञ रचाने वाले ॥

रावण सुनो सुमति हियधार सती सीता के चुराने वाले ।
सीता के चुराने वाले कुल के दाग़ लगानेवाले ॥ रावण० ॥ टेक ॥
राणी थीं दश आठ हज़ार । लाया क्यों हर कर पर नार ॥
तजकर धर्म सकल सुखकार । शीलकी बाड़ हटानेवाले॥रावण०॥१॥
जो तुझे थी सीता से प्रीत । लाया क्यों नहीं स्वयम्बर जीत ॥
यह थी क्षत्रीपन की रीत । क्षत्री नाम लजानेवाले ॥ रावण०॥२॥
जो सीता लीनी थी ठान । लाया क्यों नहीं सन्मुख आन ॥
तुमतो थे जोधा बलवान । गिर कैलास हिलानेवाले ॥रावण०॥३॥
जाकर दंडक बनके बीच । सूनी लाए सती को खींच ॥
कीना काम नीच से नीच । बने नर्कों में जाने वाले॥रावण०॥४॥
होना था सो होगया खैर । उलटी देदो सीता फेर ।
अच्छा नहीं रामसे बैर । न्यामत कहते कहनेवाले ॥ रावण०॥५॥

४५

तर्ज़ ॥ क़त्ल मत करना मुझे तेग़ो तबर से देखना ॥

है नहीं कलयुग यह है करजुग समझ के देखलो ।
जसौ जो करता है फल पाता है करके देखलो ॥ टेक ॥
जो दया करते हैं औरों पे वही पाते हैं चैन ।
दुक्ख सागर में पड़े पापी पापकर देखलो ॥ १ ॥
अपने जीने के लिये जो और का काटें गला ।

सुख नहीं पाते हैं वह भी जी सताके देखलो ॥ २ ॥
न्यायमत हिंसा का फल अच्छा कभी होता नहीं ।
आगई भारत पे आफ़त आँख उठाके देखलो ॥ ३ ॥

४६

तर्ज़ ॥ याद आवेगी तुझे मेरी वफ़ा मेरे बाद ॥

आशना काम न आवेगा कोई मेरे बाद ।
काफ़ला सारा बिछड़ जावेगा बस मेरे बाद ॥ १ ॥
जब तलक मैं हूं तो हैं यार संगाती तेरे ।
फिर कोई पास भी आवेगा नहीं मेरे बाद ॥ २ ॥
है यकीं मुझको कि अग्नी में जला देंगे तुझे ।
घर में रहने तुझे देगा न कोई मेरे बाद ॥ ३ ॥
न्यायमत कहदे यह काया से कि जप तप करले ।
वरना फिर खाक में मिल जावेगी तू मेरे बाद ॥ ४ ॥

४७

तर्ज़ ॥ पहलू में यार है मुझे उसकी ख़बर नहीं ॥

(शिव सुन्दरी अपने मनमें विचार करती है)

मिलना मेरा चेतन से अब आता नज़र नहीं ।
किस देश में वह है मुझे उसकी खबर नहीं ॥ टेक ॥
किस तौर से चेतन को कुमति फंद से लाऊं ।
मैं मोक्ष बंध में मेरा होता गुज़र नहीं ॥ १ ॥
जिन राज जगत लाज तू मेरी सहाई कर ।
चेतन बिना जीको मेरे आता सबर नहीं ॥ २ ॥

चेतन को जगत फंद में बीता अनादि काल।
न्यामत तुम्हारी बात में कुछ भी असर नहीं ॥ ३ ॥

४८

तर्ज़ ॥ अरे मुचे छोड़ो मेरी पैय्यां रे मुरकयाँ ॥

सुनियो सुमति अरदास हमारी।
विनती हमारी प्यारी अरज़ हमारी ॥ सुनियो० ॥ टेक ॥
जग महाराणी प्यारी सब सुखदानी।
दुक्ख मिटानी मेरी सुनियो पुकारी ॥ सुनियो० ॥ १ ॥
सबकी प्यारी महा उपकारी।
लाखों पहुंचाए तूने मुक्ति मंझारी ॥ सुनियो० ॥ २ ॥
सुर नर मुनि तेरा यश गावें।
शीस नवावें तेरे चरण पियारी ॥ सुनियो० ॥ ३ ॥
श्रीजिन हैं तेरे हितकारी।
वह सुखकारी दुखहारी हितकारी ॥ सुनियो० ॥ ४ ॥
कुमता के छलबल अघकारी।
चेतन को लावो प्यारी दुखसे निकारी ॥ सुनियो० ॥ ५ ॥
न्यामत को नित सीख सुनावो।
तू सब जाने जिन बाणी मेरी प्यारी ॥ सुनियो० ॥ ६ ॥

४९

तर्ज़ ॥ राजा बल मत दे दान ज़मींका ॥

अरे जीया मतकर संग बिषयनका ॥ टेक ॥
रावण ने कुलनाश करायो।

लख मुख पर तिरियन का ॥ अरे० ॥ १ ॥
सब सम्पाति पांडवों ने खोई।
खेल खेल जूवनका ॥ अरे० ॥ २ ॥
न्यामत सात बिषय को तजकर।
गाले गुण भगवनका ॥ अरे० ॥ ३ ॥

५०

तर्ज़ ॥ (इन्दर सभा) घरसे यहाँ कौन खुदा के लिये लाया मुझको ॥

हाय इन भोगों ने क्या रंग दिखाया मुझको।
बेखबर जगत के धन्दों में फसाया मुझको ॥ टेक ॥
मैं तो चेतन हूं निराकार सभी से न्यारा।
दुष्ट भोगों ही ने कर्मों से बंधाया मुझको ॥ १ ॥
नींद ग़फ़लत से मेरी आँख कभी भी न खुली।
भोग इन्द्री और बिषयों ने सुलाया मुझको ॥ २ ॥
ज्ञान धन मेरा हरा रूप दिखाकर अपना।
जून चौरासी में भटका के रुलाया मुझको ॥ ३ ॥
अब न सेऊंगा कभी भूल के इन बिषयों को।
न्यायमत जैन धरम अब तो है पाया मुझको ॥ ४ ॥

५१

तर्ज़ ॥ मामूर हूं शोखी से शरारत से भरी हूं ॥

चेतन ज़रा दे कान सुन इक बात हमारी।
हम बैरी अनादी नहीं टारे से टरेंगे ॥ १ ॥
देवों को फँसा लेते हैं मोह जाल डालकर।

ईनसां की असल क्या नहीं सुरपति से डरेंगे ॥ २॥
अय न्यायमत सब जीव हैं कर्मों के फंद में।
अहमेन्द्र और धनेन्द्र सभी बश में करेंगे ॥ ३ ॥

५२

तर्ज़ ॥ मामूर हूं शोखी से शरारत से भरी हूं ॥

चेतन हूं निराकार हरबात का ज्ञाता।
पर क्या करूं जगबंध से फंदे में फंसा हूं ॥ १ ॥
शक्ती है की कर्मों को मैं इकदम में उड़ा दूं।
लाचार हूं इस मोह की नागन ने डसा हूं ॥ २ ॥
क्या अस्ल है कर्मों की मेरे तेज के आगे।
इक छिनके छिनमें ध्यान की अग्नी से जला दूं ॥ ३ ॥
अब आन गही न्यायमत जिन शर्ण तुम्हारी।
अरदास यही है कि मैं कर्मों से रिहा हूं ॥ ४ ॥

५३

तर्ज़ ॥ जिया तू तो करत फिरत मेरा मेरा ॥

जिया तूने कैसी कुमति कमाई ॥ टेक ॥
नवदश मास गर्भ में बीते नरक योनि भुगताई।
अंधकूप से बाहर आयो मैल रह्यो तन छाई ॥ जिया० ॥ १ ॥
बालापन सब खेल गंवायो तरुण भयो सुधआई।
कामदेव आंखों में छायो पिछली बात बिसराई ॥ जिया० ॥ २ ॥
क्रोध मान माया मद राचो जो चारों दुखदाई।
जमके दूत लेन जब आवें भूल जावें चतुराई ॥ जिया० ॥ ३ ॥

धन्य भाग यह जान आपने उत्तम नर गति पाई ।
उत्तम कुल में जन्म लियो है बृथा काहे गंवाई ॥ जिया० ॥ ४ ॥
जैन धर्म न्यामत तूने पाया पूरब कर्म सहाई ।
तज मिथ्यात गहो तनमनसे जो जिन शासन गाई ॥ जिया० ॥ ५ ॥

५४

तर्ज़ ॥ इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

बिना भक्ती सुनो चेतन जगत में, तूने दुखपाया ।
अरे अब तो समझ मूरख कि अवसर तेरा बन आया ॥ टेक ॥
अनंती काल नर्कों में सहे दुखड़े बहुत तूने ।
गया अब भूल क्यों मूरख तुझे अभिमान क्या छाया ॥ १ ॥
इकेन्द्री से पचेन्द्री तक पशूपक्षी की गति भोगी ।
कहीं जलचर कहीं नभचर समझले अब तो समझाया ॥ २ ॥
स्वर्ग में भोग सुरियन संग बहुतसी सम्पदा पाई ।
लखा मुरझाई माला को तु अपने मनमें पछताया ॥ ३ ॥
मनुष भव में गर्भ माहीं उठाये कष्ट दुर्गति के ।
तरुण होकर फंसा बिषयन काम आंखों में जब छाया ॥ ४ ॥
बृद्ध होकर करी ममता गंवाए तीनो पन अपने ।
भला पछताय क्या होवे काल जब बाके मुंह आया ॥ ५ ॥
भागधन न्यायमत जानो कि उत्तम काया नर पाई ।
करो श्रद्धान जिनबाणी पे जो जिनराज फ़रमाया ॥ ६ ॥

५५

तर्ज़ ॥ चलो अब तो प्रभुजो का करलो न्हवन ॥

कहीं देखे हमारे गुरु जिन मुद्रा धार ।

जिन मुद्रा धार जिन मुद्रा धार। कहीं देखे० ॥ टेक ॥
शीत समय तटनीतट ठाढ़े शीत सहें सुमता को विचार कहीं०॥१॥
ग्रीषम ध्यान धरें गिरवर पर।
तपकर करें कर्मों का संघार ॥ कहीं ॥ २ ॥
बर्षा ऋतु तरुवर के नीचे।
क्षण क्षण सहें बून्दों की पछार ॥ कहीं० ॥ ३ ॥
न्यामत जो ऐसे गुरु मिलजां।
क्षण में कर देवें उद्धार ॥ कहीं० ॥ ४ ॥

५६

तर्ज़ ॥ हमने दर परदा तुझे माहजबीं देख लिया।
अब न कर परदा कि ओ पर्दःनशी देख लिया ॥

हमने अपनेही में वह माहजबीं देख लिया।
अब नहीं पर्दा रहा पर्दः नशीं देख लिया ॥ टेक ॥
मारे फिरते थे कहीं दहर में हूरों के लिये।
हमने वह रश्के कमर आज यहीं देख लिया ॥ हमने० ॥ १ ॥
सख्त नादानी है लोगों की जो परियों पे मरें।
क्यों परीजाद को हृदय में नहीं देख लिया ॥ हमने० ॥ २ ॥
कौन मुश्किल है जो कहते हो कि कैसे देखें।
शीशे दिल को किया साफ़ वहीं देख लिया ॥ हमने० ॥ ३ ॥
न्यायमत मसले मसायल का तो क़ायल है नहीं।
हमने तो करके तजुर्बा भी यहीं देख लिया ॥ हमने० ॥ ४ ॥

५७

तर्ज़ ॥ अच्छे सय्यां थामलो हमारी ज़रा बय्यां जी ॥ (खम्माच) तीन ताल ॥

एजी प्रभु राखलो शरण अपनैय्यांजी ॥ टेक ॥
मैं अज्ञान ना जाना तुमको ।
आज भरम मिटगैय्यांजी ॥ एजी० ॥ १ ॥
मोहे अरी इम धोक़ा दीना ।
दर दर मोहे भटकैय्यांजी ॥ एजी० ॥ २ ॥
तुमतिहूं जग नामी जग स्वामी ।
यह निश्चय करलैय्यांजी ॥ एजी० ॥ ३ ॥
न्यामतकी जो भूल हुई है ।
माफ़ करो पद गहिय्यां जी ॥ एजी० ॥ ४ ॥

५८

तर्ज़ ॥ राग जगला लावनी जंगला गारा ॥ क्यों परमादी हुवारे तुझको बीता काल अनंता क्यों परमादी हुवारे ॥

सब नर नारी सुनियो जी ।
कहुं नाटक सती द्रोपदि का सब नर नारि० ॥ टेक ॥
नाटक सुनो द्रोपदि का जी महा सती सतधार ।
किम स्वयम्बर मंडप रचाजी किम अर्जुन भरतार ॥ १ ॥
धर्म पुत्रने द्यूतरचायो दुर्योधन के तीर ।
राज पाट सब हार दिया दुस्शासन पकड़ा चीर ॥ २ ॥
ओंकार द्रोपदिने सुमरा आए शासन बीर ।
महासती का चीर बढ़ाया बंधा गए सब धीर ॥ ३ ॥

बन बनमें भ्रमते फिरे बैराट गए नर नार ।
कीचकने दुर्भाव किया तब दिया भीमने मार ॥ ४ ॥
कोप किया नारदने क्षणमें लीना चित्र बनाय ।
खंड धात कोजा पहुंचा और दिया पद्मको जाय ॥ ५ ॥
तुरत सुनाया हुक्म देवको हरलावो इसबार ।
सेज समेत उठालाया वह सती द्रोपदी नार ॥६॥
शील बचाया द्रोपदिने और तज दिया अन्न जल हार ।
कृष्ण हरी पद्मोत्तर जीता दीना शंकट टार ॥ ७ ॥
राजपाट तज भई अर्जिका लीना संजम धार ॥
त्रिया वेद को छेद द्रोपदी पहोंची स्वर्ग मंझार ॥ ८ ॥
आदि अंत सब कहूं हाल द्रोपदि का सुमति बिचार ।
न्यामत सुमरण कर जिन जीका नाटक उतरे पार ॥ ९ ॥

५९

तर्ज़ ॥ चंबोला पार की चाल में ॥

दोहा ।

दुख सागर संसार में, जानो सभी असार ।
किसके तात और भ्रात हैं, और किसके सुत नार ॥

॥ चंबोला ॥

किसके सुत और नार जगत में स्वारथ का यह ज़माना है ।
मोह जाल तज देखो नहीं कोई अपना सभी बिगाना है ॥ १ ॥
ज्यूं सूके तरुवर पंखी उड़ जावैं पास नहीं आते ।

सूके सरवर पे नर नारी पशु भट गिर नहीं जाते ॥ २ ॥
ऐसी प्रीत लखो घरकों की सब स्वारथ के साथी हैं।
अरे ना काहू का मात पिता और ना कोई यार संगाती है ॥ ३ ॥
ऐसा जान श्रद्धान करो समता अपने मनमें लावो ॥
रागद्वेष तजदे न्यामत जो भवसागर तिरना चाहो ॥ ४ ॥

६०

तर्ज़ ॥ क़त्ल मत करना मुझे तेग़ो तबर से देखना ॥

जबसे जिनमत को तजा हिंसक ज़माना होगया।
सबके दिलसे भाव का करुणा रवाना होगया ॥ टेक ॥
झूठ चोरी और ज़िनाकारी गई हदसे गुज़र।
पाप करते आप कलयुग का बहाना होगया ॥ १ ॥
जीव हिंसा जिसमें है उसको कलाम ईश्वर कहें।
हाय भारत आज कल बिल्कुल दिवाना होगया ॥ २ ॥
याद रखिये जीव हिंसासे नहीं होगी निजात।
लाखों को हिंसा से है नर्कोंमें जाना होगया ॥ ३ ॥
इक दया से दूसरे भी आपके हो जायंगे।
देखलो हिंसा से यह भारत बिगाना होगया ॥ ४ ॥
भाई से भाई लड़ें हरगिज़ दया आती नहीं।
फूटका दिलमें तुम्हारे क्यों ठिकाना हो गया ॥ ५ ॥
न्यायमत अब तो दया का भाव दिलमें कीजिये।
हिंसा करते करते तो तुमको ज़माना होगया ॥ ६ ॥

॥ इति तृतीय वाटिका समाप्तम् ॥

॥ श्री जिनेन्द्रायनमः ॥

चतुर्थ वाटिका

६१

तर्ज़ ॥ इलाजे दर्दे दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

यह कैसी आके कजरी आजकल भारत पे छाई है।
घटा आलस्य कुमति हिंसाझूठ जुड़ जुड़के आई है ॥ टेक ॥
मूर्खता शोक हठचिंता अंधेरा छागया यारो।
धुवांधार हर तरफ़ लालच ताअस्सुब ने मिचाई है ॥ १ ॥
निरुद्यमता अविद्या बिजलियां कड़कड़ाके गिरती हैं।
ध्वजा धीरज की हिम्मत की अबस इसने गिराई है ॥ २ ॥
भूककी रोगकी दुखकी बेगसे नहर चलती है।
सभी सुख सम्पदा दारिद की नदियोंने बहाई है ॥ ३ ॥
हसद के फूटके ओले तड़ातड़ रात दिन बरसैं।
नहीं मालूम होता कौन दुश्मन कौन भाई है ॥ ४ ॥
प्लेग अरु क़हत की झुरियां चलें दिल हिल गया सबका।
क्षुधा पीड़ित प्रजा दादुर ग़ज़ब हा हा मिचाई है ॥ ५ ॥
दया दिल में करो यारो परस्पर दुख हरो सबका।
कहे न्यामत दया के भावसे होती सहाई है ॥ ६ ॥

६२

तर्ज़ ॥ इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

जगत सब छानकर देखा पता सत का नहीं पाया।
निजात होनेका जिनमतके सिवा रस्ता नहीं पाया। टेक।
कोई न्हाने में शिव माने कोई गानेमें शिव माने।
कोई हिंसामें शिव माने अजब है जाल फैलाया ॥ १ ॥
कोई मरने में शिव कहता कोई जरने में शिव कहता।
दार चढ़ने में शिव कहता नहीं कुछ भेद है पाया ॥ २ ॥
कोई लोभी कोई क्रोधी किसी के संग में नारी।
जटाधारी लटाधारी किसी ने कान फड़वाया ॥ ३ ॥
कोई कहता है मुक्ती से भी उलटे लौट आते हैं।
अजब है आपकी मुक्ती मुक्त हो फिर यहीं आया ॥ ४ ॥
कोई ऐसा मान बैठा है मुक्ति ईश्वर के क़बजे में।
सिफ़ारिश बिन नहीं मिलती यही है हक़ने फ़रमाया ॥ ५ ॥
कोई कहता है कुछ यारो कोई कहता है कुछ यारो।
जो सच पूछो हैं दीवाने असल रस्ता नहीं पाया ॥ ६ ॥
अगर मुक्ती की ख्वाहिश है जैनमत की शरण लीजे।
पढ़ो तत्वार्थ शासन जिसमें शिव मारग है बतलाया ॥ ७ ॥
नहीं यहां पे ज़रूरत है किसी रिशवत सिफ़ारिश की।
चलाजो जैन शासनपे उसीने मोक्षको पाया ॥ ८ ॥
कर्म बंध तोड़के न्यामत बनो आज़ाद कर्मों से।
नहीं कोई रोकने वाला ऋषभ जिन ऐसा फ़रमाया ॥ ९ ॥

६३

तर्ज़ ॥ जागो जागो जी शाहज़ादे तुम पर वारन्वारे ॥

जागो जागो भारत बासी दुख परिहारनेरे ॥ टेक ॥
आलस्य नींद नैनमें बस गई ।
फूटफांससे सबको कसगई ॥
बनकर नाग अविद्या डसगई ॥ सब मतवारनेरे ॥ १ ॥
जो यहां थे क्षत्री रणवीर । होगए निर्बल और अधीर ॥
पड़ गई सबके गले ज़ंजीर । हिम्मत हारनेरे ॥ २ ॥
बनगये सब पुरुशारथ हीन । फिरते महा दुखी और दीन ॥
भारत होगया तेरा तीन ॥ आलस्य कारनेरे ॥ ३ ॥
हृदय दया धरम को धार । विरोध अरु क्रोधासुरको मार ।
न्यामत आलस्य नींद निवार ॥ सब सुखकारनेरे ॥ ४ ॥

६४

तर्ज़ ॥ ढोला । आन तो जगाई वैरी नींद में ॥

अरे हां रे चेतन भूला फिरे है गति चार में ॥ टेक ॥
अब नर भव पायो तूने । ला मनपर उपकारमें ॥ अरे० ॥ १ ॥
मल राग न धोया प्राणी । उमर गंवाई दोई चारमें ॥ अरे० ॥ २ ॥
सुन सीख सुगुरु की न्यामत । हितू नहीं कोई संसार में अरे० ३

६५

तर्ज़ ॥ चरखा लेदे कमरके हिलानेको ॥

कूंजी देले घड़ी के चलाने को ।
चलाने को शिव जानेको ॥

कूंजी देले घड़ी के चलाने को ॥ टेक ॥
पांचोंही इन्द्री बनीं पांच सूई ॥
बदी नेकी बातें बतानेको ॥ कूंजी० ॥ १ ॥
मनका फ़नर ज्ञान गुणकी कमानी ।
तेरा चेतन है चक्कर फिराने को ॥ कूंजी० ॥ २ ॥
सत्य धरम की कूक लगावो ।
यही काफ़ी है पुरज़े हिलाने को ॥ कूंजी० ॥ ३ ॥
कर्मोंकी रज से घड़ी को बचावो ।
सदा रखना विवेक बचानेको ॥ कूंजी० ॥ ४ ॥
सम्बरका ढकना लगावो घड़ी पे ।
निर्जर करो मैल हटाने को ॥ कूंजी० ॥ ५ ॥
सुमतीकी घंटी घड़ी पे लगी है ।
ख्वाब ग़फ़लत से न्यामत जगाने को ॥ कूंजी० ॥ ६ ॥

६६

तर्ज़ ॥ मुसलमां होनेको अय क़िबला मैं तैय्यार नहीं ॥ (नाटक हक़ीक़तराय)

वे धरम दुनियामें जीके हमें करना क्या है ।
लेके अपयश जो मरे यार तो मरना क्या है ॥ टेक ॥ ॥
काल टाला नहीं टलता है किसी का यारो ॥
जब यह तय हो ही चुका फिर तो झगड़ना क्या है । वेधरम० १
नज़र आता है नहीं जीव को शरणा कोई ॥
आपको आप शरण औरका शरणा क्या है ॥ वे धरम० ॥ २ ॥

देहको छोड़ेंगे तो देह नई पावेंगे ।
जीव मरता है नहीं मरने से डरना क्या है ॥ वे धरम० ॥ ३ ॥
करपर उपकार मरे बाद रहेंगे ज़िन्दा ॥
नाम जिनका रहे ज़िन्दा उन्हें मरना क्या है ॥ वेधरम० ॥४॥
राम रावण से बली भीम से जोधा प्यारे ।
सारेही खाक हुए हमको अकरना क्या है । वे धरम० ॥ ५ ॥
ज़िंदगी का तो नहीं कुछ भी भरोसा न्यामत ।
करले जो करना है फिर अन्तमें करना क्या है ॥ वे धरम० ॥६॥

६७

वर्ज़ ॥ इलाजे दर्दे दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

विना सम्यक्त के चेतन जनम बिरथा गंवाता है ।
तुझे समझाएं क्या मूरख नहीं तू दिलमें लाता है ॥ टेक ॥
अथिर है जगत की सम्पत समझले दिलमें अय नादां ।
राव और रंक होने का यूंही अफ़सोस खाता है ॥ १ ॥
ऐश इशरतमें दुख होवे कहीं दुखमें महा सुख हो ।
क्यों अपने में समझता है यह सब पुद्गलका नाता है ॥ २॥
विनाशी सब तु अविनाशी इन्हों पे क्या लुभाता है ।
निराला वेष है तेरा तु क्यों परमें फँसाता है ॥ ३ ॥
पिता सुत बन्धु और भाई सुहेली संग की नारी ।
सुवारथ को सभीयारी भरोसा क्या रखाता है ॥ ४ ॥
अनादी भूल है तेरी स्वरूप अपना नहीं जाना ।
पड़ा है मोह का परदा नज़र तुझको न आता है ॥ ५ ॥

है दर्शन ज्ञान गुण तेरा इसे भूला है क्यों मूरख।
अरे अब तो समझले तू चला संसार जाता है ॥ ६ ॥
तू चेतन सबसे न्यारा है भूलसे देह धारा है।
तूहै जड़में न जड़ तुझमें तु क्या धोखेमें आता है ॥ ७ ॥
जगत में तूने चित लाया कि इन्द्री भोग मन भाया।
कभी दिल में नहीं आया तेरा क्या जगसे नाता है ॥ ८ ॥
तेरे में और परमातम में कुछ नहीं भेद अय चेतन।
रतन आतमको मूरख काँच बदले क्यों बिकाता है ॥ ९ ॥
मोह के फंद में फंसकर क्यों अपनी न्यायमत खोई।
कर्म जंजीर को काटो इसी से मोक्ष पाता है ॥ १० ॥

६८

तर्ज ॥ इन्द्रसभा ॥ राजा हूं मैं कौमका और इन्दर मेरा नाम ॥

सुनो जगत गुरु बीनती अरज करूं महाराज।
तुमतो दीन दयाल हो सभी जगत की लाज ॥ १ ॥
कर्म रिपू पुर जोर हैं डरें कहूसे नाय।
मन माना दुख देत हैं कीजे कौन उपाय ॥ २ ॥
कभू नर्क ले जात हैं बिकट निगोद मंझार।
कभु सुरनर पशूगति करें जानत सब संसार ॥ ३ ॥
मैं तो एक अनाथ हूं यह बैरी अगिनंत।
बहुत किया बेहाल मैं सुनो गुरू निर्ग्रन्थ ॥ ४ ॥
इनका नेक बिगाड़ मैं किया नहीं जिनराज।
बिन कारण जग बंध से बैर भयो महाराज ॥ ५ ॥

अब आया तुम पास मैं स्वामी ऋषभ जिनन्द।
कर्मन दुष्ट विनाश दो होय मुक्ति आनंद ॥६॥
न्यायमत बिनती करे चरणन शीस नमाय।
पद पंकज सेऊं सदा और नहीं कछु चाह ॥ ७ ॥

६९

तर्ज़ ॥ कन्हैय्या तेरा कारोरी कैसे व्याहूं राधे ॥

कैसे देह धारा जीया तूतो न्यारा ॥ टेक ॥
निराकार चेतन तू कहिये सब बातों का ज्ञाता।
अपना रूप आप नहीं देखा।
कैसे जिया तू भयारे मतवारा ॥ कैसे० ॥ १ ॥
करता हरता नाम तुम्हारो अलख रूप अविनाशी।
न्यामत समझ नहीं कुछ आता।
मान लिया कैसे लाल ओर कारा ॥ कैसे० ॥ २ ॥

७०

चाल ॥ होली (चलत चाल)

यही है जैन धर्मकी होरी।
सतसंग मिलो मन बिरोध तजो ॥ यही० टेक ॥
परस्पर प्रीत करो रे भाई।
छोड़ो आपस में जोरा जोरी ॥ सतसंग० ॥१॥
पर उपकार गुलाल बनाओ।
दया धरम की खेलिये होरी ॥ सतसंग० ॥ २ ॥
न्यामत ऐसी होरी खेलो।

होवे कर्मन की तोशफोरी ॥ सतसंग० ॥ ३ ॥

७१

तर्ज़ ॥ सब ठाट पड़ा रहजावेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥

यहां कोई किसीका यार नहीं एक धर्म जीव का साथी है ॥ टेक ॥
भाई बन्धु स्वारथ के साथी नहीं कोई मीत और नाती है।
वह अंत समय दूर होते हैं जो कहते यार संगाती हैं ॥ १ ॥
तिरिया चंचल मनकी प्यारी जो आज तेरी मनभाती है।
जब नाता जगमें टूट चला तब पास ज़रा नहीं आती है ॥ २ ॥
यह देह जिसे अपनी करमानी अंत दगा दे जाती है।
जब दूत मौतका बांध चले यह संग तेरे नहीं जाती है ॥ ३ ॥
अय न्यामत क्यों भूला फिरता है बात तेरी नहीं भाती है ॥
धर्म की नाव में बैठचलो भवसागर पार होजाती है ॥ ४ ॥

७२

तर्ज ॥ टूटे न दूध के दांत उमर मेरी कैसे कटे बाली ॥ (बीच बीच में दौड़ है)

कहो किसे उलाहना देरी सखी इन करमन नटखट का।
चलो ज्ञान जल भरने मारग रोक लिया शिवकी पनघट का ॥
लपक झपक झटहो लटपट समकित का फोड़ दिया मटका ॥ टेक ॥
लोभ का मलाहै ऐसो मेरे मुखपे गुलाल।
भूल गई मैंतो ज्ञान ध्यान सुधि और संभाल ॥
काम क्रोध गेंद मार मार के पछारी।
जिन भक्ती की चीर फारी रहगई उघारी ॥

सान अबीर ले उड़ायो, इत्र कपट लगायो
मिथ्या मारग दिखायो, बुझा दिया ज्ञान दीप घटका ॥ कहो०॥१॥
माया रंगमें भिगोई, सगरी ही सुधिखोई,
करछल मनमोही, बात तत्वों की बिगोई ।
देखो ऐसी बाला जोरी, निश्चय तोरी पोरी पोरी ॥
काहू देखी ऐसी होरी, मोहे करदेई बोरी ।
भर मोह पिचकारी, आशा तृष्णा फुलवारी,
ऐसे तक तक मारी, ध्यान आरसी का दर्पण चटका ॥ कहो०॥२॥
मोह को दियो है डाल, कुछ ऐसो इन्दर जाल ।
जान पड़े कछू नहीं, हित अनहित हाल ।
तोड़ दिये ग्यारह अरु बारा व्रत माला हार ॥
नेमकी चुनरिया के, कर दिये तार तार ।
त्याग संजम बिंदी बैना, रत्न त्रय लटकैना,
दशलक्षण व्रत गहना, ज्ञान मोतियन काहार झटका ॥कहो० ॥३॥
छीन सत हथफूल, नथशील की निकाली,
खोई चरचा चम्पाकली, खींची दया कानवाली ।
मांग क्षमा दीनी खोल, लड़ी विनय की निकाल ॥
बाजुबंद तपतोड़, माया गलहार डाल ।
धर्म जोबन लुटाया, खटकर्म मिटाया,
समभाव हटाया, सखी नर्कों में जा पटका ॥ कहो० ॥ ४ ॥
कर्मों ने देखो सखी, कैसे कैसे दुख दिये ।
भगवत जाने हम से तो नाहीं जायं कहे ॥

अब शुभघड़ी आई, सखी जिन धर्म गह्यो।
जिनबाणी मनभाई, मनको भरम गयो।
न्यामत मनको मनाले, अपने में चितलाले,
अपने ही गुण गाले फिरे क्यों भवभव में भटका ॥ कहो० ॥ ५ ॥

७३

तर्ज़ ॥ आज तपोवन जायरी महावीर जिनन्दा ॥ (हमीर)

क्यों जग जालमें आएजी छोड़ो छोड़ो जी धंदा ॥ क्यों० टेक
शील और ब्रत तप संजम कीजे।
मानुष नरभव पाएजी ॥ छोड़ो० ॥ १ ॥
क्रोध मान माया लोभ निवारो।
सुरनर सब शिरनाएजी ॥ छोड़ो० ॥ २ ॥
मात पिता सुत नार सुहेली।
अंत को काम ना आएजी ॥ छोड़ो० ॥ ३ ॥
न्यामत अष्ट कर्म फंद काटो।
जिन भक्ती चितलाएजी ॥ छोड़ो० ॥ ४ ॥

७४

तर्ज़ ॥ चंबोला। अल्लादिया की चाल में (जो पार को तरफ़ गाए जाते हैं।
(यह भजन अठाई के पर्व में पढ़ा जाता है)

दोहा।

आज उत्सव तिहुंलोक में, सुरनर मन हर्षाय।
नंदीश्वर बंदन गये, लेले द्रव्य अथाय ॥ १ ॥

हम निर्बल नहीं जा सकें, मानुषोत्तर पार ।
प्रभू तेरा शरणा लिया, कीजो भवदधि पार ॥ २ ॥

चंबोला ।

कीजो भवदधि पार नाथ मैं शरणा लिया तुम्हारा ।
तीन जगत के कुदेव छोड़ तुमपे निश्चय धारा ॥ १ ॥
सेठ सुदर्शन को शूलीसे सिंघासन दीना भारा ।
पावक को करदिया नीर जब सिया ने मंत्र उचारा ॥ २ ॥
चीर बढ़ाया था द्रोपदि का सभा बीच जाने सारे ।
मानतुंग जब क़ैद हुआ तब तोड़ दिये सगरे तारे ॥ ३ ॥
राणी उर्बला की पण राखी राजा बोधमती हारे ।
दिया धर्म उपदेश अनंती भवसागर सेती तारे ॥ ४ ॥

दोहा ।

न्यामत बावन चैत्य को, बंदे शीस नमाय ।
चरण कमल महाराज के, पूजे अर्घ बनाय ॥

७५

तर्ज़ ॥ जीते जी क़द्रबशर की नहीं होती प्यारे । याद आवेगी तुझे मेरी वफ़ा मेरे बाद (यह मुबारिक बादी है)

आज मंदिर में सभा होना मुबारिक होवे ।
फिर वहीं धर्म का उपकार मुबारिक होवे ॥ १ ॥
सारे भाइयों का जमा होना धर्म की चरचा ।
नेम और धर्म का करना सो मुबारिक होवे ॥ २ ॥

मिटे अज्ञान का तमहोवे धरम उजियाला।
जैन बाणी का सदा होना मुबारिक होवे ॥ ३ ॥
होवें अघदूर यह मिथ्यात घटे छिन छिन में।
सबको सम्यक्त सदाचार मुबारिक होवे ॥ ४ ॥
कष्ट इन्द्री को मिले और बिषय को शूली।
शील की सेज हमें नित्य मुबारिक होवे ॥ ५ ॥
नष्ट कर्मों का हो जो दुष्ट महा बैरी हैं।
मोक्ष लेजाने को जिन शर्ण मुबारिक होवे ॥ ६ ॥
दंड कुमती को मिले जिसने भुलाया रस्ता।
सुमता सुन्दर का हमें संग मुबारिक होवे ॥ ७ ॥
मोह को होवे बनोबास, फंसाया जगमें।
हमको जिन भक्ति व संतोष मुबारिक होवे ॥ ८ ॥
क्रोध और मानसे हमको नहीं कुछभी मतलब।
क्षमा और शिरका झुकाना ही मुबारिक होवे ॥ ९ ॥
एक जिनमतही से मिलता है मुक्ति का रस्ता।
न्यायमत तुझको यह जिन धर्म मुबारिक होवे ॥ १० ॥

७६

तर्ज़ ॥ मेरा रतीन लगता जी अब घर आजाना ॥

गौत्तम स्वामिजी थारी बाणी तनक सुनाय ॥ टेक ॥
महाबीर मुख बाणी खिरियां।
किस बिधि झेली जाय ॥ गौत्तम० ॥ १ ॥
तज यज्ञ समोशरण में आए।

गणधर पदवी पाय ॥ गौत्तम० ॥ २ ॥
मानस्थम्भ लख मान पलाया ।
चारों ज्ञान उपाय ॥ गौत्तम० ॥ ३ ॥
जा बाणी से श्रेणक सुलझा ।
सोही हमें बतलाय । गौत्तम० ॥ ४ ॥
न्यामत सुनियो श्रीजिन वाणी ।
सूधा शिवपुर जाय ॥ गौत्तम० ॥ ५ ॥

७७

तर्ज़ ॥ चलोरी सखी दर्शन करिये रथचढ़ जादुनंदन आवत हैं ॥ (कोशिया)

चलोरी सखी मिथलापुरमें सब सखी मिल मंगल गावत हैं ॥
चलो० ॥ टेक ॥

श्रीमल्लनाथ जिन जन्म लिया ।
तिहूं लोक करत उच्छावत हैं ॥ चलो० ॥ १ ॥
कम्पित सुर आसन मुकटनमें ।
धनपति सज गज चढ़ आवत हैं ॥ चलो० ॥ २ ॥
सब सुरनर जय जय शब्द करें ।
इन्द्र चंमर दुरावत हैं ॥ चलो० ॥ ३ ॥
क्षीरोदधि सुर मिल भरलाए ।
सौधर्म अस्नान करावत हैं ॥ चलो० ॥ ४
न्यामत जिनराज करो दर्शन ।
सब मन वाँच्छित फल पावत हैं ॥ चलो० ॥ ५ ॥

७८

तर्ज़ ॥ मैंने रामकी माला फेरीरे । फेरीरे फेरीरे फेरीरे ॥ मैंने० ॥ (भैरव)

तुझे नींद अनादी आई रे।
आई रे आई रे आई रे ॥ तुझे० ॥ टेक ।
मतना बीज विषय तरु बोवे ।
फल चाखत दुख पाई रे ॥ तुझे० ॥ १ ॥
इन्द्री विषय करो मत प्यारे ।
नर्कों में ले जाई रे ॥ तुझे० ॥ २ ॥
मात तात सब स्वारथ साथी ।
विपति पड़े हट जाई रे ॥ तुझे० ॥ ३ ॥
न्यामत श्रीजिनके गुण गाले ।
भवसागर तिरजाई रे ॥ तुझे० ॥ ४ ॥

७९

तर्ज़ ॥ हमारी प्रभु नैय्या उतार दीजो पार ॥

प्रभू जी थारी बाणी ने मोह लियो जी ॥ टेक ॥
यही जिन बाणी सदा सुखदानी ।
शिवपद की निशानी सो मोह लियो जी ॥ प्रभू० ॥ १ ॥
यह जनम संवारती, करम गत टारती ।
संसार से निकारती सो मोह लियो जी ॥ प्रभू० ॥ २ ॥
जिन बाणी उरधारी, निज जनम सुधारी ।
न्यायमत बलिहारी सो मोह लियो जी ॥ प्रभू० ॥ ३ ॥

८०

तर्ज़ ॥ अमोलक जैन धरम प्यारे। भूल विषयों में मतहारे ॥

फ़ज़ूल खर्ची को तजो प्यारे।
बिगड़ गए लाखों धनवारे ॥ फ़ज़ूल० टेक ॥
ब्याह किया मन तोड़कर, हो बैठे कंगाल।
रंडी भड़वे कर दिये देज़र माला माल ॥
अजब हो मूर्ख मतवारे ॥ फ़ज़ूल० ॥ १ ॥
नामवरी के वासते भूर फूँक बहु कीन।
पीछे हाट दुकान की, हुई एक दो तीन ॥
पड़े औंधे सब नक्कारे ॥ फ़ज़ूल० ॥ २ ॥
काज रचाया नामको करके जोड़ अनेक।
काम बिगाड़ा आपना मानी कही न एक ॥
फिरें अब तो दर दर मारे ॥ फ़ज़ूल० ॥ ३ ॥
लड़का जब पैदा हुवा खूब लुटाया माल।
चाहे ज़च्चा और सुत भूक मरें बेहाल ॥
मगर हो नाम एक बारे ॥ फ़ज़ूल० ॥ ४ ॥
विद्या पढ़ने के लिये कहें कहां से आय।
बद रसमों में बंदकर आंखें लाख लुटाय ॥
बना दिये हैं मूरख सारे ॥ फ़ज़ूल० ॥ ५ ॥
मूरख बन चोरी करें करें मांस मद पान।
जूवा गणिका सङ्गमें करें धर्म की हान ॥
पड़े दुख सागर मंझधारे ॥ फ़ज़ूल० ॥ ६ ॥

फ़ज़ूल ख़र्ची कारणे बढ़ा पाप अति घोर ।
काल प्लेग अब हिन्द में छाय गया चहुं ओर ॥
हुआ भारत ग़ारत प्यारे ॥ फ़ज़ूल० ॥ ७ ॥
अब तो आंखें खोलिये भारत सुत परबीन ।
नहिं दो दिन में देखना हों कोड़ी के तीन ॥
कहे न्यामत हित की प्यारे ॥ फ़ज़ूल० ॥ ८ ॥

इति चतुर्थ वाटिका समाप्तम् ॥

॥ श्री जिनेन्द्रायनमः ॥

पंचम बाटिका

८१

तर्ज़ ॥ क़त्ल मत करना मुझे तेग़ो तवर से देखना ॥

आपमें जबतक कि कोई आपको पाता नहीं।
मोक्षके मंदिर तलक हरगिज़ क़दम जाता नहीं ॥ टेक ॥
वेदया क़ुरान या पुराण सब पढ़ लीजिये।
आपको जाने बिना मुक्ती कभी पाता नहीं ॥ १ ॥
भाव करुणा कीजिये यह ही धरम का मूल है।
जो सतावे और को सुख वह क़भी पाता नहीं ॥ २ ॥
हरन खुशबू के लिये दौड़ा फिरे जंगल के बीच।
अपनी नाभीमें बसे इसको देख पाता नहीं ॥ ३ ॥
ज्ञानपे न्यामत तेरे है मोह का परदा पड़ा।
इस लिये निज आतमा तुझको नज़र आता नहीं ॥ ४ ॥

८२

तर्ज़ ॥ चंदा तू लेजा संदेसा हमारोरे ॥ (चतुर मुकुट लख्यो खड़ी चाल)
(कृतान्तवक्र सेनापती का सीता को वनमें छोड़ना और सीता का संदेसा देना।)

सेनापती लेजा संदेस हमारो रे ॥ टेक ॥
चलत चलत व्याकुल भई दूखत सकल शरीर।

उनको दोष ना दीजिये कर्मन की तक़सीर ॥
करम में यूंही लिखा था हमारो रे ॥ सेना० ॥ १ ॥
जो तू उलटा जाय तो इतनी दियो सुनाय ।
भा मंडल भयी कही चरणन शीस नमाय ॥
मेरा दुख मत करियो पती म्हारो रे ॥ सेना० ॥ २ ॥
जगत बात सुन मैं तजी कियो ना नेक बिचार ।
सुनकर निन्दा धर्म की मत तजियो भरतार ॥
धरम बिन कोई नहीं हितकारो रे ॥ सेना० ॥ ३ ॥
क्यों जिन दर्शन की कही झूठी बात बनाय ।
जो मनमें ऐसी बसी क्यों नहीं दी दर्शाय ॥
मेरे मन यह दुख है अति भारो रे ॥ सेना० ॥ ४ ॥
छोड़ा थारे देशको छोड़ दिया घरबार ।
राम लखन सूबस बसो बसो नगर परिवार ॥
बिपति में कोई नहीं सुख कारो रे ॥ सेना० ॥ ५ ॥
क्यों रोवे सेनापती मनमें धारो धीर ।
कर्म लिखा सो होयगा लाख करो तदबीर ॥
करम नहीं टरे न्यायमत टारो रे ॥ सेना० ॥ ६ ॥

८३

तर्ज़ ॥ क़त्ल मत करना मुझे तेग़ो तबर से देखना ॥

ज़ुल्म करना छोड़दो साहिब खुदा के वास्ते ।
ज़ुल्म अच्छा है नहीं करना किसी के वास्ते ॥ टेक ॥

रहम कर जीवों पे बस मत जुल्म पर बांधे कमर ।
क्यों सताता है किसी को चन्द दिनके वास्ते ॥ १ ॥
सच कहो खुद ग़र्ज़ और ज़ालिम है तू याके नहीं ।
बेजुबां को मारता अपने मज़े के वास्ते ॥ २ ॥
काट गल औरों का मांगे खैर अपनी जानकी ।
सोच कहां होगा भला तेरा खुदा के वास्ते ॥ ३ ॥
भेट कुर्बानी बलीयज्ञ से खुदा मिलता नहीं ।
बलके दोज़ख है खुला इन ज़ालिमों के वास्ते ॥ ४ ॥
पोप मुल्लां की न सुन दिलमें ज़रा इंसाफ कर ।
है कहीं अच्छा जुल्म करना किसी के वास्ते ॥ ५ ॥
कर भला होगा भला कलयुग नहीं करजुग है यह ।
न्यायमत कहता है यह तेरे भले के वास्ते ॥ ६ ॥

८४

तर्ज़ ॥ पहलू में यार है मुझे उसकी ख़बर नहीं ॥

हिंसामें अपने मनको लगाना नहीं अच्छा ।
करुणा का भाव दिलसे हटाना नहीं अच्छा ॥ टेक ॥
यज्ञ और बलीदान खुदग़र्ज़ों ने चलाए ।
कुर्बानि जीव भेट चढ़ाना नहीं अच्छा ॥ १ ॥
हिंसाके करने से धरम होता नहीं यारो ।
झूठों के कहने सुनने में आना नहीं अच्छा ॥ २ ॥
बोते हो धतूरा नहीं अंगूर मिलेंगे ।

रस्ते में कांटे शूल लगाना नहीं अच्छा ॥ ३ ॥
काटे जो गला और का अपना कटायगा ।
धोके में आके सरका कटाना नहीं अच्छा ॥ ४ ॥
करते शिकार जीवोंका आती नहीं दया ।
यों खून बे जुबांका बहाना नहीं अच्छा ॥ ५ ॥
अपनी सी जान जानिये औरों की जानको ।
न्यामत किसी के दिलको सताना नहीं अच्छा ॥ ६ ॥

८५

तर्ज़ ॥ किस विध कीने करम चकचूर । उत्तम छिमापे जिया चस्मा म्हाने आवे ॥ किस० ॥

सुनियो मेरी बिपति जिनराज ।
कर्म महा बैरी दुख देवें ॥ सुनियो० ॥ टेक ॥
पाप पुन्य मिल बेड़ी डारी ।
चौरासी में किया बे लाज ॥
चारों गतीग्रें में फिर आया ।
बन आया नहीं कोई इलाज ॥ सुनियो० ॥ १ ॥
सात विषय में मोह लगाया ।
भूल गया निजराज समाज ॥
ज्ञान ध्यान धन सब हर लीनो ।
करदिया कौड़ी को मोहताज ॥ सुनियो० ॥२ ॥
त्रिभवन नाथ सुना जश तेरा ।

तीन लोक के तुम सरताज ॥
न्यामत शरण गही प्रभू तेरी ।
काटो भव भव के फंद आज ॥ सुनियो० ॥ ३ ॥

८६

तर्ज़ ॥ अरी मैं आज वसंत मनायो । पिया कान्ह घर आयो ॥

(होरी काफी)

ऐसी कर्मों ने कीनी खिलारी ।
होरी खेलत खेलत हारी ॥ ऐसी० ॥ टेक ॥
लोभ गुलाल मलो मोरे मुख पे,
मोह की दी पिचकारी ।
माया के रङ्गमें ऐसी भिगोई,
भूल गई सुधि सारी ।
रूप अपने को बिसारी ॥ ऐसी० ॥ १ ॥
काम क्रोध के कुमकुमे मुख पर,
भर भरमार पछारी ।
आशा तृष्णा की गैंद बनाके,
समता कुचन पर मारी ।
हँसीं सङ्ग की सब नारी ॥ ऐसी० ॥ २ ॥
सुमता सखी का संग छुड़ाया,
कुमता लार हमारी ।
नेम धर्म की अंगिया मसोसी,

ज्ञान चुनरिया फारी ।
रही मैं समा में उघारी ॥ ऐसी० ॥ ३ ॥
ऐसी कर्मों ने होरी खिलाई,
भव भवमें भई ख्वारी ।
सेवक जान करो मोपे कृपा,
यह न्यायमत दुखारी ।
गही प्रभु शरण तिहारी ॥ ऐसी० ॥ ४ ॥

८७

तर्ज़ ॥ नहीं आयोरी मेरा सांवरिया ॥ नहीं० ॥

॥ चाल ठुमरी ॥

चल आवोरी देखो सुमेला ॥ चल० ॥ टेक ॥
सखी हांसी शहर सुहावन । जिनमंदिर मन भावन ॥ सुमेला० ॥ १ ॥
मिती चौदश भादों दूजे । सम्बत् (१९४७) उनीस
सैंतालीस साजे ॥ सुमेला० ॥ २ ॥
शुभ कारज मन में छाया ।
एक मंडप अधिक बनाया ॥ सुमेला० ॥ ३ ॥
सब जन मिल की तैय्यारी ।
धरी शिविकामध्य जल झारी ॥ सुमेला० ॥ ४ ॥
गाते गाते बज़ारों आए ।
आनंद से जल भरलाए ॥ सुमेला० ॥ ५ ॥
जब प्रभुजी को न्हवन कराया ।

आनंद मेघ बर्षाया ॥ सुमेला० ॥ ६ ॥
न्यामत जिन दर्शन करलो ।
जनम जनम अघ हरलो ॥ सुमेला० ॥ ७ ॥

८८

तर्ज़ ॥ इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

यह है कर्मों की गति न्यारी किसीसे ना टरे टारी ।
करो तुम नाश कर्मों का यही दुख कारी सुख हारी ॥ टेक ॥
हरि जो नोमे नारायण भए त्रय खंड के राजा ।
मुवे पर ना कोई रोया न उत्पति मंगला चारी ॥ १ ॥
सती सीता हरी रावण हुई निन्दा सकल जगमें ।
रही अंजना बरष बारा पवन के बियोग में न्यारी ॥ २ ॥
रामचन्दर थे बलभद्दर अयुध्या राज जब पाया ।
कर्म अंतर पड़ा आके फिरे बन बनमें दुखहारी ॥ ३ ॥
पांच पांडव महा जोधा को भी कर्मोंने आ घेरा ।
द्यूतके संग करनेसे सब अपनी सम्पदा हारी ॥ ४ ॥
कर्म से बश चला किसका समझ तो न्यायमत इतना ।
छुड़ाओ कर्म के बंधन जो होवो मोक्ष अधिकारी ॥ ५ ॥

८९

तर्ज़ ॥ गये भैना पिहरवा नैना बदल ॥ (चाल ठुमरी)

जिन जीके चरणों में जीया लगा ।
जीया लागा मनको लगा प्यारे जीया लगा जिन० ॥ टेक ॥

काल अनंती नर्कों में भोगे ।
बरषों के दुखड़े सिर पे उठा ॥ जिन० ॥ १ ॥
स्वर्गों में सुरियन संग राचा ।
दुख पायो मालाको लखा ॥ जिन० ॥ २ ॥
कष्ट सहे मानुष भव गरभमें ।
बालापन अज्ञान रहा ॥ जिन० ॥ ३ ॥
तरुण हुआ बिषयों में लागा ।
निश दिन रहा काम आंखोंमें छा ॥ जिन० ॥ ४ ॥
आया बुढ़ापा ममताने घेरा ।
तीनों पन युंही दीने रुला ॥ जिन० ॥ ५ ॥
नर भव सुगति न्यायमत तूने पाई ।
खोवे अकाज मत धोके में आ ॥ जिन० ॥ ६ ॥

९०

तर्ज़ ॥ अब तुम बिन लछमन भैय्या नैय्या डूब चली मंझधार ॥

अब श्री जिन भक्ती बिना रे जिया तेरी कौन बँधावे धीर ॥टेक॥
जपो जपो नित श्री अरिहंत सनमति और महावीर ।
एजी वर्द्धमान अतीबीर जपो जिया और जपो जय बीर । अब० १
नर्क निगोद सभी फिर आयो सही अनंती पीर ।
स्वर्गोंमें मालाको लख जिया हुआ बहुत दलगीर ॥ अब० ॥२॥
गर्भ मांहि दुर्गति दुख भोगे पीयो रुधिर शरीर ।
कष्ट थकी बाहर आयो जिया नहीं अंगपे चीर ॥ अब० ॥ ३ ॥

क्षुधा तृषा नहिं मिटी जिया तूने पीये समंदर नीर।
एक बूंद क्षीरोदधि हो और इक कण होवे समीर॥ अव० ॥ ४ ॥
चौरासी के दुख महाभारी सुनो कान धर धीर।
इन दुक्खोंसे जभी छूटे जिन चरणन आवो तीर॥ अव० ॥ ५ ॥
स्वारथ साथी इस जगमें जिया साथी नहीं शरीर।
न्यामत शरण गहो जिनवर तेरी नैय्या पहुंचे तीर॥ अव० ॥ ६ ॥

९१

तर्ज़ ॥ हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन, उसे कोई कलेश लगा न रहा ॥

रहे जब लग मोहके फंदेमें, परमातम ध्यान कछू न रहा।
जब परदा मोह हटा दिलका परदा परमातम का न रहा ॥
निज आतम को जब आतम में लिया देख आतम की आंखोंसे।
परकाश हुआ परमातम का तब कोई भेद छुपा न रहा रहे०॥१॥
जब परको छोड़ लखा अपने में भिन्न लखा निजको पर सेती।
न्यामत आपा पर भेद मिटा परका लवलेश लगा न रहा ॥ रहे०॥२

९२

तर्ज़ ॥ कोई ना वाक़िफ़ो ना फ़हम पय अंदाज क्या जाने ॥

कोई ना वाक़िफ़ो नादान चेतन सार क्या जाने।
यह अविनाशी अमूरत सच्चिदानन्द सार क्या जाने॥ टेक ॥
बरङ्ग बू है पोशीदा हमारे तनमें यह गुलरू।
सिवाये आत्मा परमात्मा इसरार क्या जाने॥ कोई० ॥ १ ॥
फँसे हैं जो कि दुनियां में भला यह बात क्या जाने।
वही जाने जो निज आतम को जाने और क्या जाने ॥कोई०२॥

वही हैं जानने वाले जो निज और परको पहिचाने।
अरे न्यामत वह क्या जाने जो अपने को नहीं जाने ॥ कोई० ।३॥

९३

तर्ज़ ॥ अजी हम आये हैं दर्शन काज मिटादो प्रभू विथा हमारी जी ॥

ऐजी हम दर्श लखो जिनराज घटा चहुं आनंद छाई जी ॥ टेक ॥
नाम प्रताप तिरे अंजन से।
कीचकसे अभी मान। नार शिव सुन्दर मिलाईजी ॥ एजी०॥१॥
नग्न स्वरूप छबी बैरागी।
नाशा दृष्टि पसार। तिहारी छबि मन मेरे भाई जी ॥ एजी०॥२॥
उदय रबी आतम भयो मेरे।
मिथ्या तिमिर संहार। लखी जो मैंने छबि बीतराई जी ।एजी० ३
भव बनमें मेरे कर्मन बैरी।
हर लिया ज्ञान बिचार। करो ना प्रभू मेरी सहाई जी। एजी० ।४।
तारण तरण सुनो यश तेरो।
न्यामत ओर निहार। यही है मेरी दुहाई जी ॥ एजी० ॥ ५ ॥

९४

तर्ज़ ॥ सोरठ अधिक स्वरूप रूप का दिया न जागा मोल ॥

लिया नेम नाथ जिन जन्म मुकुट सुरपति के झुक आये ॥टेक॥
बहु बिध बाजे बजे अनाहद ज्योतिष घर जाये।
तीन लोकमें शोर हुआ सब सुरगण भरमाए ॥ १ ॥

कल्पवासी घर घंटे बाजत आसन कंपाये।
उठ बैठे सुर असुर इन्द्र सब पूजनको आए ॥ १ ॥
इन्दर सब पूजन को आये मनमें हर्षाए।
तांडव नृत्य किया सुरपति ने चरणन शिरनाए ॥ २ ॥
सब सखियन मिल मंगल गावें कर कर उच्छाए।
फिर धनपति ऐरावत रच सज गज चढ़ कर आये ॥ ४ ॥
न्यामत दर्शन करो प्रभू के शौरीपुर जाए।
जनम जनम संकट कट जा मन वंच्छित फल पाए ॥ ५ ॥

९५

तर्ज़ ॥ सोरठ अधिक स्वरूप रूपका दिया न जागा मोल ॥

अजी न्हवन करो जिन राज चलो सब जल भर कर लावें॥ टेक॥
हांसी हिसार के भाई मिलकर जल भरने जावें।
हर्ष हर्ष मिल मंगल गावें सर चरणन नावें ॥ १ ॥
थै थै थै थै नाचत आवें मनमें हर्षावें।
तांडव नृत्य करें प्रभू आगे वंच्छित फल पावें ॥ २ ॥
धीरे धीरे निरख पृथ्वी जल भरने जावें।
अजी हाथों हाथ कलश सब लेकर निर्मल जल लावें ॥ ३ ॥
सोरण चमर ढुरें प्रभुजी के आनंद यश गावें।
न्हवन करें श्रीजिन गंधोदक मस्तक पर लावें ॥ ४ ॥
धन्य घड़ी धनभाग हमारे प्रभु सुमरण पावें।
भव भवमें यह न्यामत पावें मंगल दर्शावें ॥ अजी० ॥ ५ ॥

१६

तर्ज़ ॥ शशी तेरे बाग़में उतरे सिपाही (शशीपुन्नो) ॥

घड़ी धन आज यह पाई है मैंने ।
न्हवन जिनराज हाथों से कराऊं ॥ टेक ॥
पहन सुन्दरसे वस्तर अपने तनमें ।
कलश लेकर जतनसे नीर लाऊं ॥ घड़ी० ॥ १ ॥
रतन चौंकी बिछा पंचरस मिलाऊं ।
न्हवन क्षीरोदधीसे मैं कराऊं ॥ घड़ी० ॥ २ ॥
हर्षकर पंच मंगल गीत गाऊं ।
नृत्य करके चमर फिर फिर ढुराऊं ॥ घड़ी० ॥ ३ ॥
बिधीसे करके यों अस्नान जिनका ।
बिनय करके सिंघासन पर बिठाऊं ॥ घड़ी० ॥ ४ ॥
प्रभामंडल प्रभूके पीठ सोहै ।
छत्र जिनराज सिर ऊपर फिराऊं ॥ घड़ी० ॥ ५ ॥
न्यायमत इस तरह प्रक्षाल करके ।
प्रभू चरणों में शीस अपना झुकाऊं ॥ घड़ी० ॥ ६ ॥

१७

तर्ज़ ॥ (चाल नाटक) अम्मा मुझे गोटे की टोपी दिलादे ॥

प्यारे जिन चरणोंमें जीया लगाले ।
जीया लगाले मनको मनाले ॥ परदा हटाले हटाले ॥ प्यारे० ॥

वह सबका स्वामी । तिहूं जगमें नामी ॥
है उसको सारे चराचर का ज्ञान ।
हितकारी, सुखकारी, दुखहारी, नित ॥ हां हां हां ॥ प्यारे० ॥ १ ॥
प्यारे परमातम के तू गुणको गाले ।
तू गुणको गाले । नक़शा जमाले ।
हां रे उसका हृदय में ध्यान लगाले ॥ प्यारे० ॥
जो कोई ध्यावेगा । सुरपद्वी पावेगा ।
मुक्ती को जावेगा पावेगा ज्ञान ।
सब दर्शी, सबदर्शी, सब दर्शी. नित ॥ हां हां हां ॥ प्यारे० ॥ २ ॥
प्यारे ज़रा कर्मों का कोट उड़ाले ।
सम्यक्त बंदूक़ भर ज्ञान गोली,
चारित्र टोपी चढ़ाले ॥ प्यारे० ।
राग को छोड़िये, द्वेष को तोड़िये,
बंदूक़ छोड़िये । हड़ड़ड़ धड़ीम ॥
न्यामत हो, झटपट हो, झटपट हो, फ़ैर । धररर धूम ॥ प्यारे० ॥ ३ ॥

९८

तर्ज़ ॥ (चतुरमुकट) कंथ बिन कैसे जीऊं मेरी जान ॥

स्वप्ना सच मत जानियो, क्या स्वप्ने की बात ।
स्वप्ने में साजन मिले, करी नहीं दो बात ॥ कंथ० ॥
धर्म बिन कोई न जगमें सार । धर्म बिन० ॥ टेक ॥
यह संसार असार में कोई न अपना जान ।

मात पिता परिवार सब हैं झूठे मन आन ॥ धर्म० ॥ १ ॥
धन जोबन थिर ना रहै रहेना तेरी काय ।
कोटी भटसे नारहे तू किसपे गर्भाय ॥ धर्म० ॥ २ ॥
भीम और अर्जुन मरे बल और कृष्ण मुरार ।
कंस जरासिंधु नारहे करते गर्व अपार ॥ धर्म० ॥ ३ ॥
सदा नहीं रावण रहा नील और हनुवंत ।
राम और लछमन मरे इन्द्रजीत बलवंत ॥ धर्म० ॥ ४ ॥
यूं लख मन थिर्ता धरो करलो पर उपकार ।
सार जगत में है यही न्यामत देख विचार ॥ धर्म० ॥ ५ ॥

९९

तर्ज ॥ आहा प्यारा दिनहै न्यारा शाहजादे की शादी का ॥

आहा प्यारा दिन है न्यारा जनम ऋषभ जिनआदी का ।
सब शचिगन मिल मङ्गल गावें दिनहै मुबारकबादी का ॥ टेक ॥
स्वर्ग मंझारी हुई तैय्यारी आए सब झननन झूम ।
धनपति ऐरावत रच लाए घननन नन नन घूम ॥ आहा० १
सब सुरनारी दे दे तारी नाचैं छननन छूम ।
ताल मंजीरे बीन बांसुरी बज रही तन नन तूम ॥ आहा० ॥२॥
जल थल बनबन आनंद घनघन छाए घन नन घूम ।
सुखरस बूंदें रिम झिम बरसें झन नन नन नन झूम ॥ आहा० ॥ ३ ॥
सब दुख टारे पाप निवारे दया धरम की धूम ।
जय जय कार मची तिहुं जगमें धन धन भारत भूम ॥ आहा० ॥ ४ ॥

सुरासुरा आवें फूल वर्षावें झन नन नन नन झूम ।
न्यामत प्यारी बादे बहारी चल रही सन नन सूम ॥ आहा० ॥ ५ ॥

१००

तर्ज़ ॥ रघुवर कौशल्या के लाल मुनी की यज्ञ रचाने वाले ॥

धन धन महावीर जिनराज शिव मारग दिखलाने वाले ॥
शिव मारग दिखलानेवाले सबका भ्रम मिटानेवाले ॥ धन० टेक
करके देश विदेश विहार, कीना सत मारग परचार ।
फैला दिया धर्म एकबार, हिंसा दूर हटाने वाले ॥ धन० ॥ १ ॥
यहां था पशू यज्ञका जोर, होती थी नित हिंसा घोर ।
तुमने दिया यज्ञ सब तोड़, भारत प्राण बचानेवाले ॥ धन० ॥ २ ॥
बाम मारग को दूर हटाया, तुमने शील धर्म बतलाया ।
सबको शिव मारग दिखलाया, हो अज्ञान मिटानेवाले ॥ धन० ३ ॥
जितलाकर युक्ती परचंड, कर दिये सब झूठे मत खंड ।
भागे छोड़ छोड़ पाखंड, झूठी बात बनानेवाले ॥ धन० ॥ ४ ॥
भारत हो रहा तेरा तीन, न्यामत है पुरुषारथ हीन ।
है परवश अति ही भाधीन, तुम ही धीर बंधानेवाले ॥ धन० ॥ ५ ॥

॥ इति पंचम वाटिका समाप्तम् ॥

॥ इति श्री जैनभजन शतक समाप्तम् ॥

नोटिस

निम्न लिखित भाषा छंद बद्ध चरित्र प्राचीन जैन पंडितोंने रचेथे जिनको अब संशोधन करके मोटे कागज़ पर मोटे अक्षरों में सर्व साधारणके हितार्थ छपवाया है सब भाइयोंको पढ़कर धर्म लाभ उठाना चाहिये-यह दोनो जैन शास्त्र स्त्री पुरुषोंके लिये बड़े उपयोगी हैं, इनकी कविता प्राचीन है और सुन्दर हैं॥ दोनो शास्त्र जैन मंदिरों में पढ़ने योग्य हैं:—

(१) भविसदत्त चरित्रः—यह जैन शास्त्र श्रीमान् पंडित वनवारी लालजी जैनने सम्वत् १६६६ में कविता रूप चौपाई आदि भाषा में बनाया था जिसको कई प्रतियों द्वारा मिलान करके शुद्धता पूर्वक छपवाया है और कठिन शब्दोंका अर्थ भी प्रत्येक सुफे के नीचे लिखा गया है इसमें महाराज,भविसदत्त और सती कमलश्री व तिलकासुन्दरी का पवित्र चरित्र भले प्रकार दर्शाया गया है। सजिल्द मूल्य २)

(२) धन कुमार चरित्रः—यह जैन शास्त्र श्रीमान् पंडित खुशहाल चन्द जी जैन ने कविता रूप चौपई आदि भाषा में रचा था इसको भी भले प्रकार संशोधन करके छपवाया है इसमें श्रीमान् धनकुमार जी का जीवन चरित्र अच्छी तरह दिखाया गया है। सजिल्द मूल्य १)

(३) नमोंकार मंत्रः—फूलदार बढ़िया मोटा कागज़ मू० ﴿)

पुस्तक मिलनेका पताः—

बा० न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्टिरिक्ट बोर्ड हिसार।

मु० हिसार (जिला खास हिसार)

(पंजाब)

(नोटिस)

न्यामतसिंह रचित जैन ग्रन्थमाला के वह अंक जिनके सामने मूल्य लिखा गया है छप कर तय्यार हैं—बाक़ी अंक भी शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं:—

			नागरी	उर्दू
१	जिनेन्द्र भजन माला	...	।-)	०
२	जैन भजन रत्नावली	...	।)	०
३	मूर्ति मंडन प्रकाश (जैन भजन पुष्पांजली)	...	॥)	०
४	जिनेन्द्र पूजा	...	=)	०
५	कर्ता खंडन प्रकाश (ईश्वर सरूप दर्पण)	...	॥)	०
६	भविसदत्त तिलकासुन्दरी नाटक	...	१॥)	॥)
७	जैन भजन मुक्तावली	...	।)	०
८	राजुल भजन एकादशी	...	=)	०
९	स्त्री गान जैन भजन पचीसी	...	=)	०
१०	कलियुग लीला भजनावली	...	=)	-)॥
११	कुन्ती नाटक	...	=)	०
१२	चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक	...	॥।)	।=)
१३	अनाथ रुदन	...	-)	०
१४				
१५				
१६				
१७				
१८	जैन भजन शतक	...	।=)	०
१९	थ्येटरीकल जैन भजन मंजरी	...	≡)	=)
२०	मैनासुन्दरी नाटक (बढ़िया मोटे काग़ज़ मोटे अक्षर छटी अडीशन)	...	२॥)	०

पुस्तक मिलने का पता—

न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मु० हिसार (पंजाब)

Niamat Singh Jain,

Secretary District Board, HISSAR (Punjab)

पं० घासीराम त्रिपाठी के देशोपकारक प्रेस, लखनऊ में छपा।